ISSN-2321-3981

सचित्र
प्रेरक
बाल
मासिक

देवपुत्र

माघ २०८१ फरवरी २०२५

₹ ३०

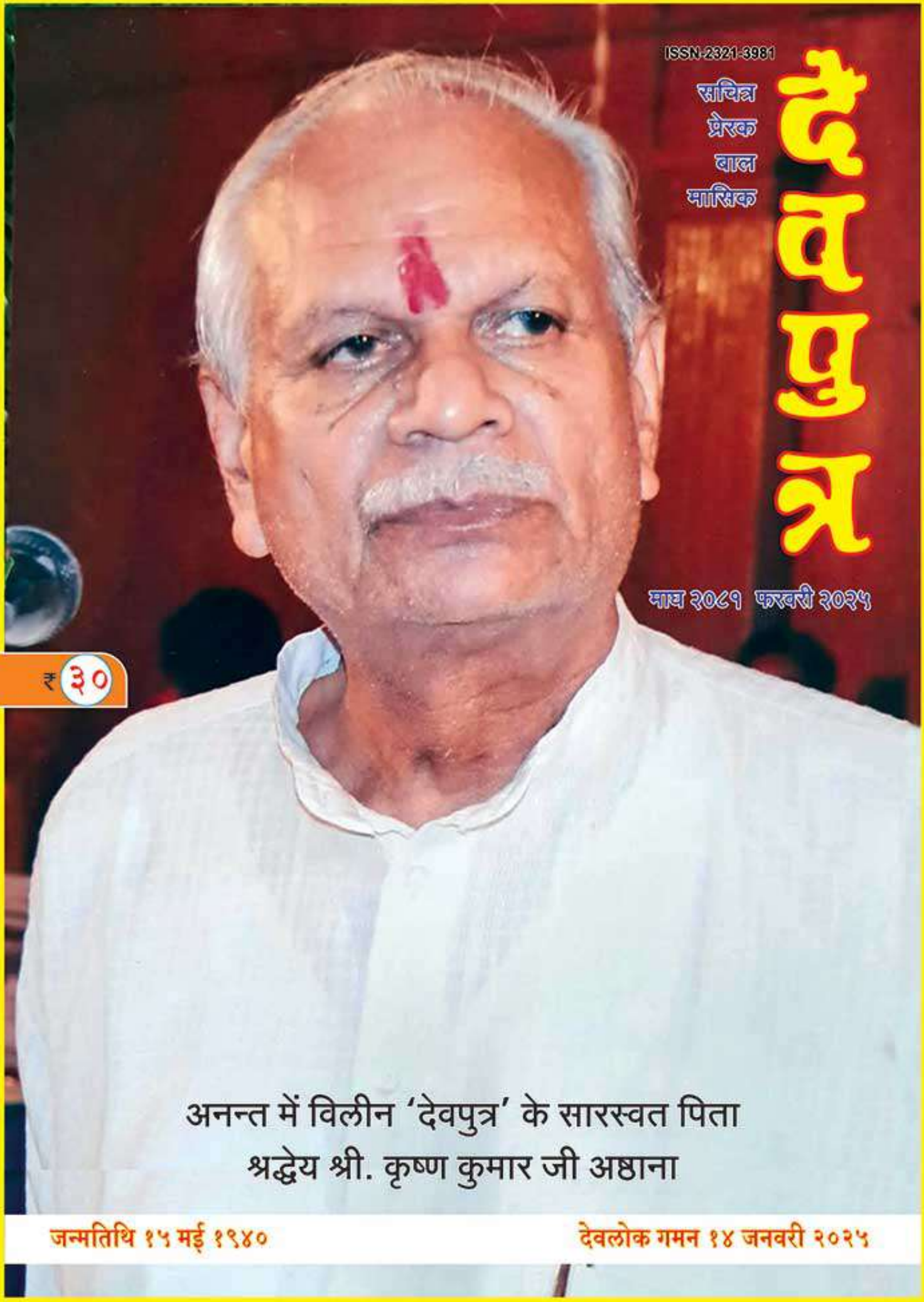

अनन्त में विलीन 'देवपुत्र' के सारस्वत पिता
श्रद्धेय श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना

जन्मतिथि १५ मई १९४०

देवलोक गमन १४ जनवरी २०२५

श्रद्धाजंलि

देवपुत्र के देवता देवलोक गमन

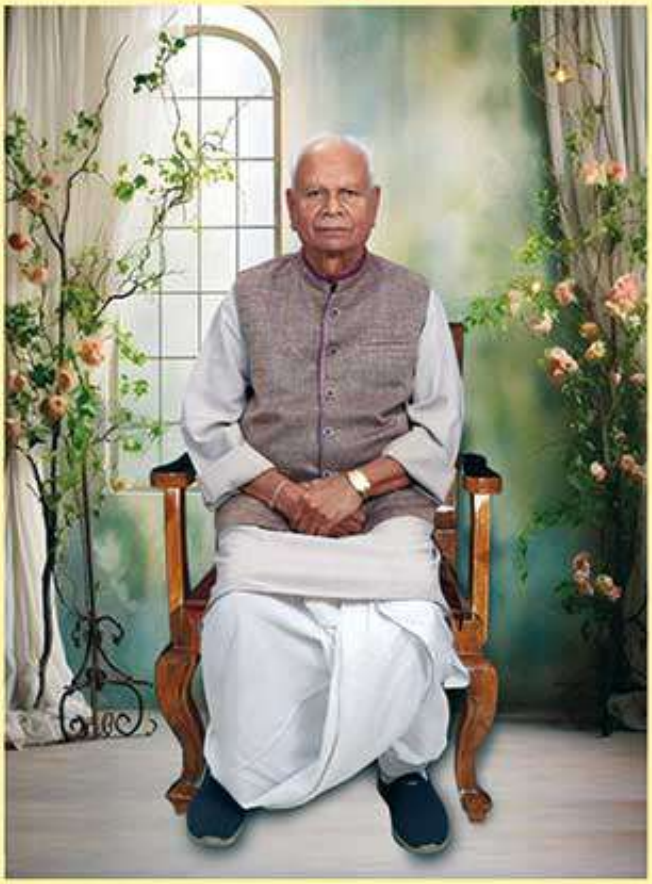

दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी जीवनभर अविचल चलता है गीत को शब्द शब्द सार्थक करते 'देवपुत्र' के अभिभावक, मार्गदर्शक, गुरु आदरणीय श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना अपनी लौकिक ध्येय यात्रा को विराम देकर अनंत यात्रा पर चले गए। वे 'देवपुत्र' के भीष्म पितामह थे और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान कार्यकर्ता जो जीवनभर अपने जैसे और कार्यकर्ता निर्माण करने में ही एक योगी की भाँति जुटे रहे। साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा और संगठन ही उनके जीवन के पुरूषार्थ चतुष्टय बन चुके थे। संगठन ने जिस कार्य का भी दायित्व दिया उसे सम्यक रीति से सर्वोच्च शिखर तक ले पाने का उनका प्रयास वर्षों तक अनेक पीढ़ियों के लिए आदर्श रहेगा। 'देवपुत्र' को साधन-विहीन अवस्था से सम्हाला और उसे विश्व कीर्तिमान तक स्थापित कर दिया।

जिस क्षेत्र में भी वे सक्रिय हुए कार्यकर्ता निर्माण करते हुए, जहाँ पथ न भी मिला पथ बनाते चले गए।

राष्ट्रभक्ति उनकी शिराओं में रक्त बनकर बही वे अनजाने भी किसी संगठन के आदर्शों से नहीं डिगे। उनकी लेखनी ने सतत् राष्ट्रदेव की आराधना की उनकी वाणी ने सदैव राष्ट्रीयता का ही उद्घोष किया।

ध्येयपथ पर चलते-चलते ध्येयरूप हो जाने के वे श्रेष्ठ उदाहरण बन गए। गंगाजल की भाँति समभाव से अपने पास आए हर मानस को अपनी अगाध आत्मीयता से तृप्त करने वाले श्री. अष्ठाना जी अपने पचासी वर्ष की जीवन यात्रा में प्रथम बार किसी चिकित्सालय में भर्ती हुए और यह प्रथम बार ही अंतिम बार सिद्ध हुआ।

भीष्म पितामह की भाँति उत्तरायण आरंभ होते ही ब्रह्ममुहूर्त में साहित्य, संगठन और समाज सेवा का देवता अपने पालित-पोषित देवपुत्र को उत्कृष्ट स्थापना देकर अनन्त पथ पर चला गया।

उनका यों चला जाना एक ऐसे शून्य का सृजन कर गया है जिसको भरने में संभवत: सदियाँ लगें। परमपिता परमात्मा उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान देंगे। 'देवपुत्र' में वे अब भौतिक देह से कभी नहीं आएँगे लेकिन जब तक देवपुत्र रहेगा वे देवपुत्र से जाएँगे नहीं। उनकी प्रेरणामयी वैचारिक वाटिका एवं संस्कार सुगंध देवपुत्र का प्राण बनकर मार्गदर्शन करेगी। उन्होंने एक आयु पूर्ण की है पर एक युग का निर्माण किया है।

बाल साहित्य में संस्कारों की स्थापना के इन महान पुरोधा तपस्वी को उनका अपना संस्कारित किया 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' एवं 'देवपुत्र परिवार' अश्रुपूरित श्रद्धांजलि देते हुए उनके निर्देशित पथ पर चलने को संकल्पित है।

-

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
(विद्या भारती से सम्बद्ध)

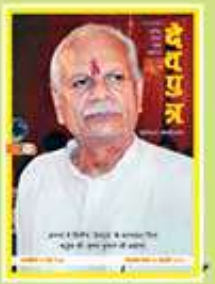

माघ २०८१ ▪ वर्ष ४५
फरवरी २०२५ ▪ अंक ०८

संरक्षक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

१४ जनवरी २०२५ 'देवपुत्र की ४५ वर्षीय अखंड यात्रा का एक अत्यन्त कठोरतम दिवस सिद्ध हुआ है। अनेक संघर्षों और उतार-चढ़ाव के साथ देवपुत्र को श्रेष्ठता के उच्च सोपानों पर ले जाने वाले देवपुत्र के प्रधान संपादक रहे श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना ने हमसे चिर विदा ले ली। आपने अनेक संपादकीयों के रूप में देवपुत्र की 'अपनी बात' में अपने इन बड़े भैया से प्रेरणा प्राप्त की होगी। आज आप देवपुत्र का जो आचार-विचार-संस्कार-प्रकार और प्रचार देख रहे हैं उसके रचनाकार श्री. अष्ठाना जी ही हैं। 'देवपुत्र' और अष्ठाना जी परस्पर पर्याय बन चुके थे। वे कार्यकर्ता निर्माण का चलता-फिरता विश्वविद्यालय थे।

'देवपुत्र' के तेरहवें वर्ष के, तीसरे अंक (अक्टूबर १९९१) से देवपुत्र का श्री. अष्ठाना के पास आना ऐसा ही था जैसे जन्म लेकर कोई किशोर होता बच्चा किसी ऋषि के आश्रम की संस्कार शाला में प्रविष्ट हुआ हो। यहाँ से देवपुत्र निरंतर ऊँचाई पर ही पहुँचा। वे देवपुत्र के रूप में केवल एक प्रकाशित नहीं करते, उसके पाठक बच्चे 'देवपुत्र' बनें इसका चिंतन करते हुए देवपुत्र के प्रत्येक अंक को सँवारते थे। देशभर के बाल साहित्यकारों को जोड़कर बालमन के आँगन में संस्कारों की रंगोली रचने की प्रेरणा देने वाले तपस्वी संपादक श्री. अष्ठाना जी ने जो पथ दिखलाया उस पर चलते रहने का आशीर्वाद देकर वे हमसे सदैव के लिए विदा हो गए।

इस आकस्मिक आघात से मन अत्यन्त विव्हल है शब्द साथ नहीं दे रहे बहुत कुछ लिखा जाना चाहिए इन महापुरुष पर लेकिन संपादक की कलम थमाने वाला ही चला गया तो लेखनी भी कैसे साथ दे? विवशता है कि उनके सौंपे दायित्व के कारण इस कलम को फिर भी चलना ही होगा। जीवनभर उनके विचार उनके संस्कार पाथेय बनकर हमें आगे बढ़ने की सामर्थ्य देगें यह विश्वास है पर उनकी प्रत्यक्ष मार्गदर्शन न मिल पाने की क्षति अपूरणीय रहेगी। विनम्र श्रद्धांजलि।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- दादू जिन्दाबाद -समीर गांगुली १०
- अँधेरा भी चाहिए -डॉ. सत्यनारायण 'सत्य' २४
- अपने को छोटा मत समझो -विमला रस्तोगी ३६

छोटी कहानी

- नदी के नीचे का संसार -विवस्वान अनमोल ०७

एकांकी

- किताबी कीड़े मत बनो -घमंडीलाल अग्रवाल २८

आलेख

- भारतरत्न डॉ. चंद्रशेखर वैंकटरमन -डॉ. राकेश चक्र १९

यात्रा वृत्तांत

- कान्हा : जंगल का रोमांचक अनुभव -डॉ. कुसुमरानी नैथानी १५

पत्र

- नानी की चिट्ठी -डॉ. विमला भण्डारी ३२

प्रसंग

- धर्मवीर बालक हकीकतराय -साँवलाराम नामा ०५

कविता

- साहस के पुतले -सूर्यकुमार पाण्डेय ०६

स्तंभ

- छः अँगुल मुस्कान - ०८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी २३
- लोकमाता अहिल्याबाई होळकर -अरविन्द जवळेकर २७
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३४
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' ३८
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी ४१
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४२
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ४४
- आपकी पाती - ४६

बौद्धिक क्रीडा

- भूल भुलैया -चाँदमोहम्मद घोसी १४
- कहानी पहेली -प्रकाश तातेड़ २१
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी २२
- बूझो उनका नाम - २६

चित्रकथा

- सवाल -संकेत गोस्वामी ०९
- कोई क्यों नहीं घुमाता -देवांशु वत्स ३१

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच. परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

प्रसंग– वसन्त पंचमी : बलिदान दिवस

धर्मवीर बालक हकीकतराय

– साँवलाराम नामा

भारत वह पुण्यवान और वीर भूमि है। जहाँ हिन्दू धर्म की जी–जान से रक्षा के लिए बलिदान देने वालों में छोटे बच्चे भी कभी पीछे नहीं रहे और रहेंगे। वर्ष १७१९ में स्यालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) के पास एक गाँव में श्री. भागमल खत्री के घर–परिवार में जन्मा हकीकतराय ऐसा एक धर्म–कर्म वीर था।

हकीकतराय के माता–पिता धर्मप्रेमी थे। अत: बचपन से ही उसकी अभिरुचि अपने पवित्र धर्म हिन्दू के प्रति जाग्रत हो गयी। उसने छोटी–सी आयु में ही अच्छी देववाणी संस्कृत भाषा सीख ली। उन दिनों भारत में मुस्लिम शासन था।

इसलिए अरबी–फारसी भाषा जानने वालों को महत्व मिलता था। इसी से हकीकतराय के पिता ने १० वर्ष की अवस्था में फारसी पढ़ने के लिए उसे एक मदरसे में भेज दिया। बुद्धिमान हकीकतराय वहाँ भी सबसे आगे रहता था।

हकीकतराय की प्रतिभा से अन्य मुस्लिम छात्र ईर्ष्या से जलने लगे। वे प्राय: उसे नीचा दिखाने का भरसक प्रयास करते थे; परन्तु हकीकत तो सदा–सर्वदा अध्ययन में ही लगा रहता था। अपने आप में मस्त।

एक बार मौलवी को किसी काम से दूसरे गाँव जाना था। उन्होंने बच्चों को पहाड़े याद करने को कहा और स्वयं चले गये। उनके जाते ही सब छात्र खेलने लगे; पर हकीकत एक ओर बैठकर पहाड़े याद करता रहा। हकीकत के दत्तचित्त, एकाग्रता से पहाड़ों को याद करते रहा। हकीकत की इस लगन, धुन देखकर मुस्लिम छात्र उसे नाना भाँति से परेशान करने लगे। इसके बाद भी जब हकीकत विचलित नहीं हुआ, तो एक छात्र ने उसकी जबरदस्ती से पुस्तक छीन ली।

यह देखकर हकीकत बोला– ''तुम्हें भवानी माँ की कसम है, मेरी पुस्तक लौटा दो।'' इस पर वह मुस्लिम छात्र बोला– ''तेरी भवानी माँ की ऐसी की तैसी।'' हकीकत ने आवेश में आकर कहा– ''खबरदार! जो हमारी देवी के प्रति ऐसे अपमानजनक शब्द बोले। यदि मैं तुम्हारे पैगम्बर की बेटी फातिमा–बी के लिए ऐसा कहूँ, तो तुम्हें कैसा लगेगा? लेकिन वह तो लड़ने–झगड़ने पर उतारू था।

अत: हकीकत उसकी छाती पर चढ़ बैठा और मुक्कों से उसके चेहरे का नक्शा बदल दिया। उसका रौद्र विकराल (भयंकर) रूप देखकर बाकी छात्र डरकर चुपचाप बैठ गये। किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उसे कुछ कहें।

थोड़ी देर में मौलवी लौट आये। मुस्लिम छात्रों का गुस्सा तीसरे आसमान में चढ़ गया अत: छात्रों ने बढ़–चढ़कर नमक–मिर्च लगाकर सारी घटना उन्हें बतायी। इस पर मौलवी ने हकीकत की पिटाई पर

पिटाई की और उसे दण्ड के लिए काजी के पास ले गये। काजी ने इस सारे विवाद को लाहौर के बड़े इमाम के पास भेज दिया।

उसने सारी बात सुनकर निर्णय दिया कि हकीकत ने इस्लाम का अपमान किया है। अत: उसे मृत्युदण्ड मिलेगा। पर यदि वह मुसलमान बन जाए, तो उसे क्षमा किया जा सकता है।

बालवीर हकीकत ने अपने स्वाभिमान के साथ सिर ऊँचा कर कहा– ''मैंने हिन्दू धर्म में जन्म लिया है और हिन्दू धर्म में ही मरूँगा।''

मौलवियों ने उसे और भी कई प्रकार से प्रलोभन (लालच) दिए। हकीकत के माता–पिता और पत्नी भी उसे धर्म बदलने को कहने लगे, जिससे वह उसकी आँखों के सामने तो रहे पर हकीकत ने तो स्पष्ट कह दिया कि व्यक्ति का शरीर मरता है, आत्मा नहीं।

अत: मृत्यु के भय से मैं अपने पवित्र हिन्दू धर्म का त्याग नहीं करूँगा– प्राण जाए पर वचन नहीं जाएगा, यह हमारी परम्परा है।

अत: ०४ फरवरी १७३४ वसन्त पंचमी को उस धर्म प्रेमी बालक का निर्ममता से सिर काट दिया। जब जल्लाद सिर काटने के लिए बढ़ा तो हकीकत के ओजस्वी, तेजस्वी मुखमण्डल को देखकर उसके हाथ से तलवार ही छूट गयी।

इस पर हकीकत ने उसे निडर, निर्भीक, साहस के साथ अपना कर्त्तव्य पूरा करने को कहा। कहते हैं कि सिर काटने के बाद धरती पर न गिरकर आकाश मार्ग से सीधा स्वर्ग में चला गया। उसी स्मृति में वसन्त पंचमी को आज भी आकाश में पतंगें उड़ायी जाती हैं।

– भीनमाल (राजस्थान)

कविता

साहस के पुतले

– सूर्यकुमार पांडेय,लखनऊ (उ. प्र.)

मुट्ठी में आग और दिल में सम्मान,
वीर देश की हम संतान।

शीतलता चंदन–सी,
सूरज–सी गर्मी,
दृढ़ता पत्थर जैसी,
फूलों–सी नरमी।

मन में हैं सौ–सौ अरमान,
मगर नहीं करते अभिमान।
वीर देश की हम संतान।

हँसकर अँगारों पर
चल सकते हैं हम,
साहस के पुतले हैं
नहीं किसी से कम।

हम जो भी व्रत लेते ठान,
वह मुश्किल होती आसान।
वीर देश की हम संतान।

छोटी कहानी

नदी के नीचे का संसार और रोबोट का जादू

– विवस्वान अनमोल

नदी के किनारे एक छोटा–सा गाँव था, जहाँ के लोग अपना जीवन नदी के साथ जीते थे। नदी के पानी में हर चीज सरल थी– प्यारा–सा पानी, ताजगी से भरी हवा, और जीवन की धारा। लेकिन नदी के अंदर एक बिल्कुल अलग दुनिया थी। नदी के निचले भाग में कई अलग–अलग मछलियाँ, कछुए और छोटे जीव रहते थे।

इन जीवों के बीच एक मछली थी, जिसका नाम था 'फिन्सी'। फिन्सी एक जिज्ञासु और होशियार मछली थी। उसे हमेशा से यह प्रश्न परेशान करता था कि नदी के नीचे की दुनिया और किस प्रकार से काम करती है। एक दिन उसने सोचा, ''हमारी दुनिया में बहुत सारी तकनीकि चीजें हो सकती हैं। यदि हम भी मनुष्य की तरह कुछ नई चीजें सीख सकें, तो हमारे जीवन में कितना सुधार हो सकता है।''

फिन्सी ने स्मोक से कहा– ''हमारे पास बहुत–सी चीजें हैं, किन्तु हम वह सब उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। क्या तुमने कभी सोचा है कि हम अपने पानी के नीचे के जीवन को और अच्छा कैसे बना सकते हैं?''

स्मोक ने थोड़ा विचार किया और फिर कहा– ''मुझे लगता है कि हम मनुष्यों की तरह अपनी दुनिया को और उन्नत बना सकते हैं। हम नदी में एक रोबोट बना सकते हैं, जो हमारे काम आसान कर सके।''

फिन्सी को यह विचार बहुत अच्छा लगा। उसने तुरंत अपने मित्र 'लूना' से बात की, जो एक स्मार्ट और तकनीकि रूप से सक्षम कछुआ थी। लूना ने बताया कि इंसानों के पास रोबोट होत हैं, जो बहुत सारे काम कर सकते हैं। ''हम भी एक ऐसा रोबोट बन सकते हैं।'' लूना ने कहा– ''जो नदी के नीचे सफाई करे, मछलियों की सहायता करे, और हमारी सुरक्षा का ध्यान रखे।''

सबने मिलकर एक योजना बनाई। लूना ने नदी के किनारे से इकट्ठा किए गए पुराने धातु और अन्य सामग्री का उपयोग किया। स्मोक ने रोबोट की डिजाइन बनाई, और फिन्सी ने अपनी तेज तैराकी क्षमता का उपयोग करके रोबोट को नदी के अंदर प्रयोग करने के लिए तैयार किया।

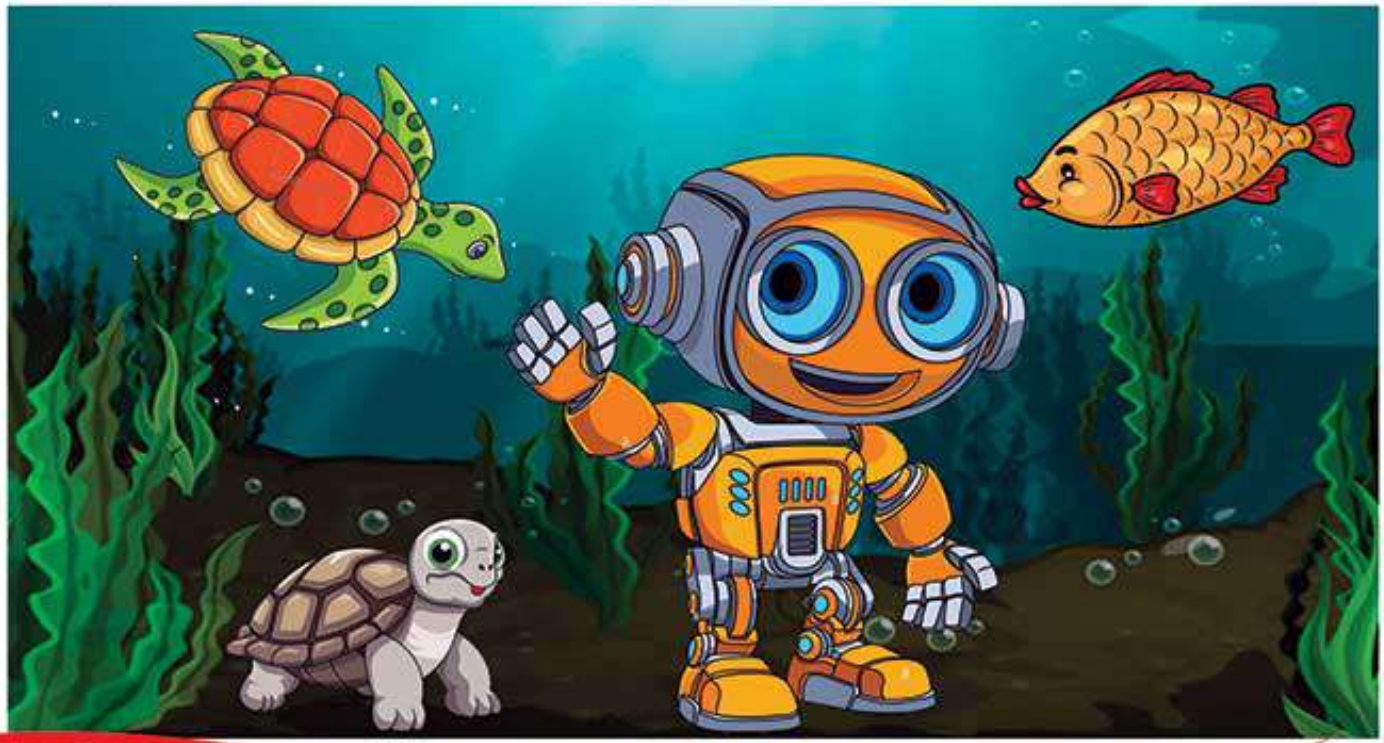

कुछ समय बाद, नदी के निचले भाग में पहला 'पानी-रोबोट' तैयार हो गया। इसे 'जल-पंख' नाम दिया गया। जल-पंख एक स्मार्ट रोबोट था, जो पानी के नीचे तैर सकता था और कई काम कर सकता था। वह नदी के किनारे से कचरा हटाता, मछलियों को सही दिशा में मार्गदर्शन करता और यहाँ तक कि जल प्रदूषण का पता भी लगाता।

जल-पंख का पहला काम था नदी की सफाई करना। पहले नदी में बहुत सारी गंदगी और कचरा जमा हो जाता था, जिससे पानी की गुणवत्ता खराब हो जाती थी। लेकिन जल-पंख ने इस समस्या को सुलझा लिया। अब पानी साफ था, और मछलियाँ खुशी-खुशी तैर रही थीं।

फिन्सी ने जल-पंख से एक और काम करवाया। मछलियों की सहायता करना। जल-पंख ने मछलियों के बीच संवाद स्थापित किया और उन्हें नदी के सबसे सुरक्षित भागों में ले जाने में सहायता की। अब कोई भी मछली खतरे में नहीं थी।

इसके बाद, नदी के हर भाग में सुरक्षा के लिए जल-पंख को तैनात किया गया। यदि कोई बाहरी जानवर आता या नदी के पार कुछ गड़बड़ होती, तो जल-पंख तुरंत सचेत कर देता।

धीरे-धीरे, नदी की दुनिया तकनीक से जुड़ी होने लगी। जल-पंख के द्वारा किए गए कार्यों से सभी जल जीव प्रसन्न थे। नदी का पानी अब स्वच्छ और सुरक्षित था। मछलियाँ स्वस्थ थीं और किसी भी समस्या का तुरंत समाधान हो जाता था। फिन्सी और उसके मित्रों ने साबित कर दिया कि यदि तकनीकि से काम किया जाए, तो जीवन को अच्छा और सरल बनाया जा सकता है।

नदी के भीतर की दुनिया ने एक नया रूप लिया, जहाँ स्मार्ट रोबोट्स और तकनीकि की सहायता से सभी जीवों का जीवन और भी सुरक्षित और सरल हो गया।

अब, जब कभी भी नदी के किनारे लोग आते और उसकी सुंदरता को देखते, तो उन्हें पता चलता कि यहाँ की मछलियाँ और जीव भी नई तकनीकों के साथ जीवन जी रहे हैं। और इस प्रकार नदी का जीवन और भी समृद्ध हो गया।

– पटना (बिहार)

☺ छः अँगुल मुस्कान ☺

शर्मा जी के कुर्ते की जेब में अनजान व्यक्ति ने हाथ डाल दिया।

शर्मा जी– ये क्या बदतमीजी है?

व्यक्ति– जरा माचिस ले रहा था।

शर्मा जी– तो आप माँग सकते थे?

व्यक्ति– मुझे राह चलते अजनबियों को टोकने की आदत नहीं है।

*****

वेटर– मुझे बुखार है।

डॉक्टर– ठीक है! मैं कुछ दवाएँ लिख रहा हूँ। उनको पानी के साथ ले लेना।

वेटर– डॉक्टर साहब! रेग्यूलर वॉटर चलेगा या मिनरल वॉटर?

अध्यापक– राजेश, बताओ पजामा एक वचन है या बहुवचन?

छात्र– जी! ऊपर से तो एक वचन है और नीचे से बहुवचन।

*****

नेता– प्यारे भाइयों, यदि इस बार आपने मुझे चुनाव में जिताया तो मेरा वादा है कि आपके शहर को स्वर्ग बना दूँगा।

श्रोता– लेकिन नेताजी अभी तो हम लोग जीना चाहते हैं, अभी से स्वर्ग में जाकर क्या करेंगे।

*****

सभी को संबोधित करते हुए नेताजी बोले– भाईयो! हमारी विरोधी पार्टी आपको पिछले ३० बरसों से धोखा दे रही है। अब हमें भी कुछ करने का अवसर दीजिए।

सवाल
..अच्छा ठीक है तुम मेरे यहां कल से काम करने आ जाना..
मगर यह तो बताओ तुमने पिछली नौकरी क्यों छोड़ी?
पहले आप एक बात बताएंगे?
हां हां जरूर पूछो..
आपका पिछला नौकर नौकरी क्यों छोड़ गया?

दादू जिंदाबाद

– समीर गांगुली

आज तीसरा दिन था। दादू ने कहा था– ''मुझसे दस फुट की दूरी बनाए रखना। पीछे–पीछे मत चलना, बस मेरी एक्टिविटी पर नजर रखना। तिरछी आँख से देखना, ताड़ते मत रहना।''

और मधुर यही कर रहा था। वे रोज लगभग उसी समय रे रोड से शाम ५.४० की कर्जत जाने वाली लोकल के सातवें डिब्बे पर सवार होते और दादर में उतर जाते।

एक नंबर प्लेटफॉर्म के सामने वजन बताने वाली मशीन के सामने मिलते और दादू कहते– ''नहीं! आज बात नहीं बनी। कल फिर से ट्राई करेंगे।''

वे घर लौट आते। उदास और हारे हुए।

लेकिन तीसरे दिन दादू ने कुछ नहीं कहा। उसकी ओर ताका भी नहीं। मधुर को लगा, शायद आज बात बन गई है। हालाँकि दादू क्या कर रहे हैं, वह नहीं जानता, इसमें उसकी भूमिका केवल एक गवाह की थी।

दादू चुपचाप आकर वजन बताने वाली मशीन के पास रखे बेंच बैठ गए, सिर पकड़कर। इतना घबराए और बेचैन दिखे कि दो–चार लोगों ने पूछ ही लिया– ''काका! स्वास्थ्य ठीक तो है?''

किन्तु दादू ने उनको कोई उत्तर नहीं दिया, बस अपनी कमीज और पेंट की जेबों को बार–बार टटोलते रहे और 'हाय लुट गया, हाय लुट गया' जैसे शब्द बड़बड़ाते रहे।

फिर उन्होंने अपना बाबा आदम के जमाने का घटिया सा मोबाइल निकाला और एक हाथ से उसे थामकर दूसरे हाथ की एक अँगुली से एक–एक बटन दबाकर एक नंबर मिलाया।

दूसरी तरफ से आवाज आयी– ''हलो! दादर पुलिस स्टेशन, मैं सब इंस्पेक्टर पँवार बोल रहा हूँ।

दादू लड़खड़ाती आवाज में बोले– ''सब इंस्पेक्टर साहब! मैं लुट गया, मेरी मेहनत की कमाई लुट गई।''

दूसरी तरफ से राहत देने वाली आवाज सुनाई दी, ''आज एक गिलास ठंडा पानी पीजिए और शांति से मुझे सारी बात बताइए।''

दादू बोले– ''मैं जहाँ खड़ा हूँ वहाँ केवल कोल्ड–ड्रिंक दिखाई दे रहा है। और उससे मेरा गला खराब हो जाता है। आप पानी–वानी छोड़िए, मेरी बात सुनिए।''

पुलिस सब इंस्पेक्टर सहानुभूति के साथ बोला– ''हाँ–हाँ! मैं आपकी बात सुन रहा हूँ। आप पहले अपना परिचय दीजिए। कहाँ से बोल रहे हैं ये बताइए। फिर कहिए कि आपके साथ क्या हुआ, यानी आपका क्या लुटा है और आपको किसने लूटा है?''

दादू इस बार बिफर गए– ''अरे बाबा! किसने लूटा है ये पता होता तो क्या मैं तुम्हें फोन करके

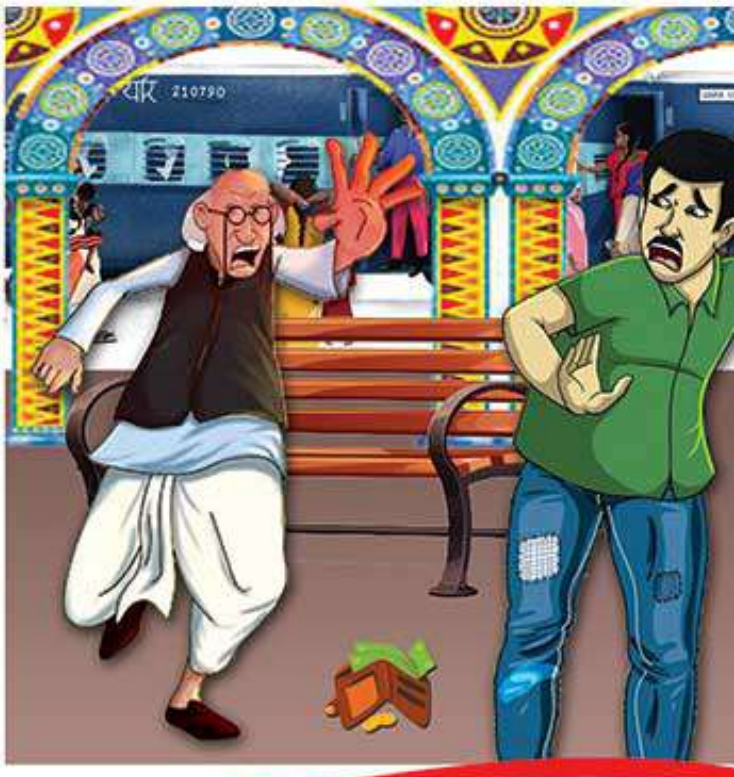

सहायता माँगता। उसका ही गला नहीं पकड़ लेता। साथ में अपने बेटे सुधीर और दोनों पोतों को भी ले जाता। हम सबके पास डंडे होते और उसको ऐसा पीटते, ऐसा पीटते कि....।''

पुलिस वाला उन्हें बीच में ही रोकते हुए बोला– ''मैं समझ गया। अच्छा अब आप ये बताइए कि आपके साथ हुआ क्या है और आप मुझसे क्या चाहते हैं?''

दादू बोले– ''मैं सीनियर सिटीजन मुकुट बिहारी पुरुषोत्तम हूँ। तुम मुझे दादू कह सकते हो, क्योंकि मुकुट या बिहारी या पुरुषोत्तम नाम अलग–अलग कहने से कुछ गड़बड़ सा लगता है। तो सुनो, तुम दादर प्लेटफॉर्म नं. १ पर आ जाओ। मेरी जेब से पॉकेटमार ने पूरे बीस हजार निकाल लिए हैं। तुम यहाँ आकर मुझे न्याय दिलाओ।''

अब तक दादर थाना के पुलिस सब–इंस्पेक्टर की समझ में आ गया था कि उनका आज पाला किस आदमी से पड़ा है।

फिर भी प्रतिरोध के स्वर में उन्होंने कहा, ''दादूजी! आपको यहाँ पुलिस स्टेशन आकर रिपोर्ट करवानी होगी। आप चले आइए, मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।''

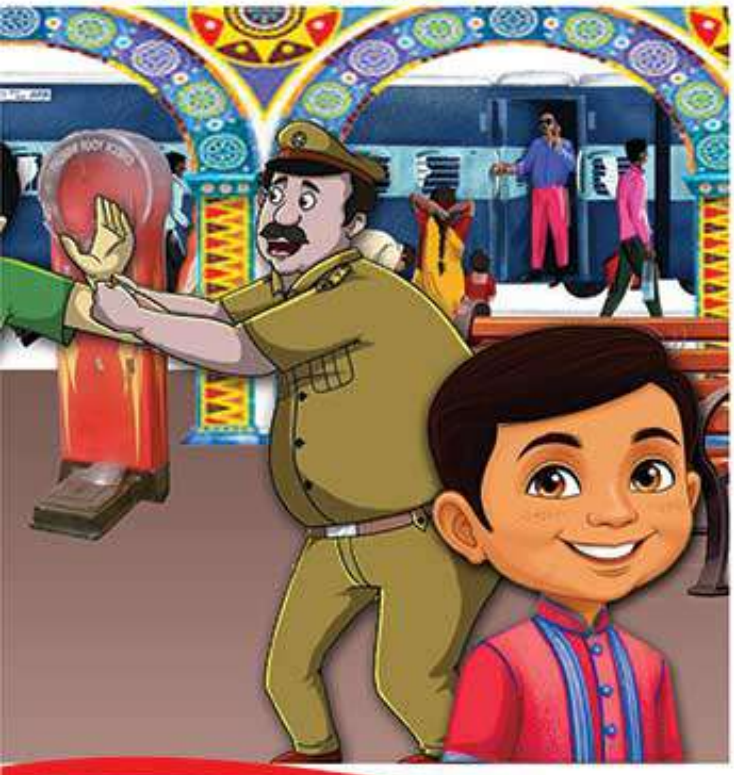

दादू गुस्सा हो गए बोले– ''सब–इंस्पेक्टर साहब! मैं लुट गया हूँ। मैं मौका–ए–वारदात पर बेबस खड़ा हूँ और आप मेरी मजबूरी का मखौल उठा रहे हैं।''

''अरे बाप रे!'' दस फुट की दूरी से सात फुट के फासले पर चला आया मधुर, दादू के ये डायलॉग सुनकर चौंक उठा। उसे नहीं मालूम था कि दादू ऐसी ड्रामेबाजी भी कर सकते हैं।

दादू अभी रुके नहीं थे, वे आगे बोले– ''सुनो साहब! यदि आप नहीं आए, तो मैं लाइफ से सरेंडर करता हूँ। मैं पटरी पर कूद जाऊँगा। मेरे लिए बीस हजार की पूँजी को गँवाना, जो पोते की कोचिंग क्लास की फीस की थी, बहुत मायने रखती है। अब मैं उसके सामने मुँह दिखाने लायक नहीं रहूँगा। ऐसे में मेरे जीने का क्या लाभ।''

यह कहते–कहते दादू ने एक नजर अपने पोते मधुर को देख भी लिया।

उधर फोन पर मौजूद सब–इंस्पेक्टर पँवार एक भला आदमी था। उसे इस लाचार आदमी पर दया आ गई। वह हड़बड़ाकर बोला– ''दादू! तू कुछ नहीं करेगा। चुपचाप बैठे रह वहाँ पर और मेरी प्रतीक्षा कर। किन्तु दादू मैं तुझे पहचानूँगा कैसे? फोन तो तुमने लैंडलाइन नंबर पर किया है।''

दादू ने छोटा–सा उत्तर दिया– ''तुम्हें मुझे पहचानने का कष्ट नहीं करना होगा। मैं तुम्हें पहचान लूँगा। तुम यहाँ आकर बस किताबों की दुकान के सामने खड़े हो जाना। और जब मैं ठीक समझूँगा, मैं तुम्हें पुकार लूँगा।''

सब–इंस्पेक्टर पँवार कुछ और भी पूछना चाहता था, लेकिन दादू ने फोन काट दिया।

अब दादू फिर से अपने पुराने राग पर आ गया।

''हाय लुट गया। बदमाश मेरे पूरे बीस हजार

लूट कर ले गया। अरे बेशर्म तुझे दया नहीं आई इस सत्तर वर्ष के सीनियर सिटीजन पर। तुमने जब पर्स खोला होता तो मेरा फोटो भी देखा होगा और मेरे पोते की फीस की पर्ची भी। अरे आधार कार्ड की कॉपी भी तो रखी है, उसमें मेरा पता भी तो था, फिर भी तेरे ईमान ने तुझे धिक्कारा नहीं।''

मधुर अब बोर होने लगा था। दादू की लगातार दस मिनिट से चल रही कॉमेन्ट्री का उसे कोई मतलब समझ में नहीं आ रहा था।

इस बीच सब-इंस्पेक्टर पँवार भी मौका-ए-वारदात (यही जुमला उपयोग किया था ना दादू ने।) पर पहुँच गया था और मधुर ने देखा कि एक कड़क पुलिस वाला टाइम-पास करने के लिए वडा-पाव खा रहा था। और इधर-उधर का मुआयना कर दादू को ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रहा था।

लेकिन तभी एक और अजीब-सी घटना घटी। एक सत्ताईस से तीस के बीच का नौजवान जिसने हरी टी-शर्ट और फटी जीन्स पहन रखी थी। न जाने कहाँ से दादू के पास आ गया और एक पर्स उसकी ओर उछालते हुए बोला- ''बुढ़ऊ! पर्स में नकली नोट रखता है और फिर ये नौटंकी करता है। रख अपना पर्स अपने पास। दरिद्दर की औलाद। यदि दुबारा सामने दिखा तो ब्लेड से तेरी जेब नहीं तेरा पेट काटूँगा।''

उसने बहुत धीरे और दाँत पीसते हुए अपनी बात कही थी, जिस पर आसपास से गुजरते किसी भी यात्री ने गौर नहीं किया था।

किन्तु ऐसा उसने क्यों कहा, इसे जानने के लिए हमें थोड़ा पीछे लौटना होगा। पाँच दिन पीछे। मधुर कोचिंग क्लास से घर लौटा तो दादू उसका चेहरा पढ़कर समझ गए, कि कुछ गड़बड़ है।

बार-बार कुरेदने पर उसने बताया कि उसने सीएसटी के बाहर एक एटीएम से बीस हजार निकाले थे, जो कि कोचिंग क्लास में जमा कराने थे। फिर एक मित्र के साथ रे रोड तक गया था। वहाँ से दादर के लिए कर्जत लोकल पकड़ी और दादर में जब उतरा तो जेब कट चुकी थी। पॉकेटमार ने पूरे बीस हजार पर हाथ साफ कर दिए थे। यह कहकर उनका सत्रह वर्ष का पोता फक-फकाकर रोने लगा था।

वे निम्न-मध्यम वर्ग के लोग हैं। मधुर के पिता की नौकरी से पूरा घर चलता है और नौकरी में गिनती के पैसे मिलते हैं। उन पैसों से बीस हजार लुट जाएँ तो किसी से बर्दाश्त नहीं होता है।

दादू से भी बर्दाश्त नहीं हुआ। वे थोड़ी देर चुप रहे। उन्होंने मधुर को रोने दिया। यह अहसास भी होने दिया कि पॉकेटमार से जेब कटवाने वाला भी पचास प्रतिशत दोषी है।

उसके बाद वे उठकर उसके पास आए और उसके कंधे पर हाथ रखकर बोले- ''तुझे मैं पैसे वापस दिलाऊँगा। पाँच दिन की डेडलाइन के अंदर।''

मधुर ने अविश्वास से पूछा- ''कैसे?''

दादू बोले- ''तू अपनी आँखों से देखेगा। पॉकेटमार स्वयं आकर लौटाएगा।''

मधुर को अब भी विश्वास नहीं हुआ। ''किन्तु कैसे?''

दादू हँसकर बोले- ''प्लानिंग करने दे मुझे। बस तू मेरे साथ रहेगा।''

और उसके बाद....

चलिए हम फिर से क्लाइमैक्स पर लौटते हैं। दादू ने पहले पर्स लपका, और फिर उस पॉकेटमार की एक टांग।

और फिर गदगद् आवाज में बोले- ''अरे मित्र! तू तो खांटी सोना निकला। तू मेरा पर्स लौटाने आया है। तू आदमी नहीं, तू पॉकेटमार भी नहीं, तू तो दयावान है।

मैं तेरे पैर पकड़कर तुझे प्रणाम करता हूँ। मेरे भाई ये नोट नकली नहीं है। असली हैं। तू पूरे पच्चीस

हजार लौटा रहा है या कुछ अपनी मेहनत के रख लिए हैं। चल कोई बात नहीं। पॉकेटमारी का काम भी तो कितना मुश्किल है, अपने जमीर को गिरवी रखना पड़ता है।''

''बुड्ढे! बंद कर अपनी बकवास और मेरा पैर छोड़।'' पॉकेटमार तिलमिलाकर चिल्लाकर बोला। ''एक तो बच्चों की तरह पर्स में नकली नोट रखता है। अपना टाइम खोटी कर दिया। तू पागल है क्या?''

इतनी बातचीत काफी थी, पुलिस सब-इंस्पेक्टर पँवार और मधुर को सावधान होने और इशारा समझने के लिए।

दोनों अपनी जगह से चीते की तरह लपके और उन्होंने पॉकेटमार को दबोच लिया। आसपास से गुजरते लोगों को भी भनक लग गई कि एक पॉकेटमार पकड़ा गया है। फिर तो कई लात, घूँसे टूट पड़े उस पर।

पॉकेटमार की थोड़ी खातिरदारी हो देने के बाद दादू ने एक दूसरा पैंतरा चला। वे उसके रक्षक बन गए। सबसे हाथ जोड़कर बोले- ''जाओ भाई! जाओ, अब अपने दूसरे जरूरी काम करो या घर जाओ, दाल-भात या सब्जी-रोटी खाओ।''

जब भीड़ छँट गई और वहाँ पॉकेटमार, पुलिस, दादू और पोता यानी मधुर ही बचे तो दादू ने सीधे पॉकेटमार से कहा- ''भैया! अब तेरी समझ में तो आ गया होगा कि ये खेल क्या था?''

''कैसा खेल? मैं कुछ समझा नहीं!'' पॉकेटमार ने कहा।

''मैं भी नहीं समझा।'' सब इंस्पेक्टर पँवार ने कहा।

दादू बोले- ''समझाता हूँ। ऐसा है कि बचपन में मुझे मछली पकड़ने का बड़ा शौक था। काँटे में चारा डालकर घंटों तक तालाब में फिशिंग रॉड को डुबोए रखता था। और बचपन की आदत कहाँ छूटती है। इसलिए मैंने चारे की जगह नकली नोट का उपयोग किया। और मछली रूपी पॉकेटमार को पकड़ लिया।''

सब-इंस्पेक्टर पँवार ने कहा- ''वाह दादू! आपने तो कमाल कर दिया। अब इसे पुलिस स्टेशन ले चलते हैं। हवालात में ये सब कुछ उगलेगा। आप दोनों को भी साथ चलना होगा, एफआईआर लिखवाने।''

दादू ने शांति से यह सुना। कुछ पल मौन रहे और फिर पॉकेटमार के कंधे को थपथपाते हुए बोले- ''मेरे कलाकार दोस्त! वही लोकल, वही टाइम, वही स्टेशन... ये कोई संयोग नहीं, पूर्व-निर्धारित है ना, पाँच दिन पहले तुमने ही मेरे पोते की जेब से पच्चीस हजार निकाले थे। इसमें मुझे जरा भी शक नहीं है। यदि तुम अपने किसी साथी को फोन करके आधे घंटे में पच्चीस हजार रुपए मंगवाकर मुझे दे दो तो मैं तुम्हारे विरुद्ध एफआईआर नहीं करवाऊँगा। वरना तुम समझ ही सकते हो कि पँवार साहब के हत्थे चढ़ गए तो कितनी धुनाई होगी और फिर मरहम-पट्टी में पच्चीस हजार की जगह पचास हजार भी निकल सकते हैं।

पॉकेटमार तिलमिला उठा और उसके मुँह से निकल गया- ''मगर पर्स में तो केवल बीस हजार ही थे।''

पँवार साहब हँस दिए। इसे कहते हैं अँग्रेजी में कन्फेशन।

दादू बोले- ''ना भाई! ना, मेरी गिनती में तो पूरे पच्चीस हजार थे। वह भी असली नोट।''

मरता क्या न करता। पॉकेटमार ने दो-तीन फोन मिलाए और आधे घंटे में पच्चीस हजार रुपए आ गए, दादू के पास।

हालाँकि सब-इंस्पेक्टर को यह बात बिलकुल पसंद नहीं आयी कि एक पॉकेटमार को छोड़ दिया जाए। उन्होंने दादू को समझाने की बहुत कोशिश की, किन्तु दादू नहीं माने।

वे बोले– ''देखो साहब! मुझे इस आयु में थाने के चक्कर नहीं लगाने। इससे गलती हो गई थी। लेकिन इसने स्वयं आकर पैसे लौटा दिए तो मेरा भी कर्त्तव्य बनता है ना कि इसे सुधरने का एक अवसर दिया जाए।''

दादू के उच्च विचार सुनकर पॉकेटमार ने हाथ जोड़ लिए। सब–इंस्पेक्टर ने भी अनमने भाव से विदा ली। दादू और मधुर लौट चले। लेकिन अचानक दादू बोले– ''मधुर! तू रुक मैं अभी आता हूँ।''

इतना कहकर वे पँवार साहब के पास पहुँचे। फुस–फुसाकर उनके कान में कुछ कहा और पॉकेटमार की नजर बचाकर पँवार साहब की जेब में कुछ नोट ठूँस दिए।

मधुर ने यह देख लिया। और दादू के आते ही वह गुस्से से बोला– ''दादू! आपने ये क्या किया?''

दादू हँसकर बोले– ''बेटा! अपना कर्त्तव्य किया। एक पॉकेटमार यूँ ही छूट जाए, ये कैसे हो सकता है। इसलिए मैंने पँवार साहब के कान में कहा– इसको थाने न ले जाकर कहीं और ले जाकर थोड़ी पिटाई कर देना, ताकि यह स्वयं चलकर घर जाने लायक न रहे। फिर उसे ये पाँच हजार दे देना उपचार हेतु, क्योंकि असल में इसने बीस हजार का ही पर्स मारा था।''

मधुर बोला– ''फिर!''

दादू बोले– ''फिर इस पर नजर रखना। अवश्य ही यह फोन करके अपनी गैंग के साथियों को बुलाएगा। इसे उठाकर ले जाने के लिए। साथी आएँगे और सब मिलकर अपने अड्डे तक पहुँचेंगे। बस वहीं दबोच लेना। और एक पॉकेटमार के बदले उनके एक पूरे गैंग को समाप्त कर देना। बस इतना ही कहा।''

मधुर दादू की ओर देखता रह गया। फिर वह दादू को गले लगाते हुए दिल खोलकर चिल्लाया– ''दादू! जिंदाबाद।''

– मुंबई (महाराष्ट्र)

भूल–भूलैया

ग से गमला

– चाँद मोहम्मद घोसी

गमले के महकते फूलों की खुशबू से मोहित होकर रानी मधुमक्खी फूलों का रस चूसना चाहती है। प्रिय बच्चो, आप मधुमक्खी को गमले के पास पहुँचाने का कष्ट करें ताकि यह अपनी इच्छापूर्ति कर सके।

– नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी, नागौर (राजस्थान)

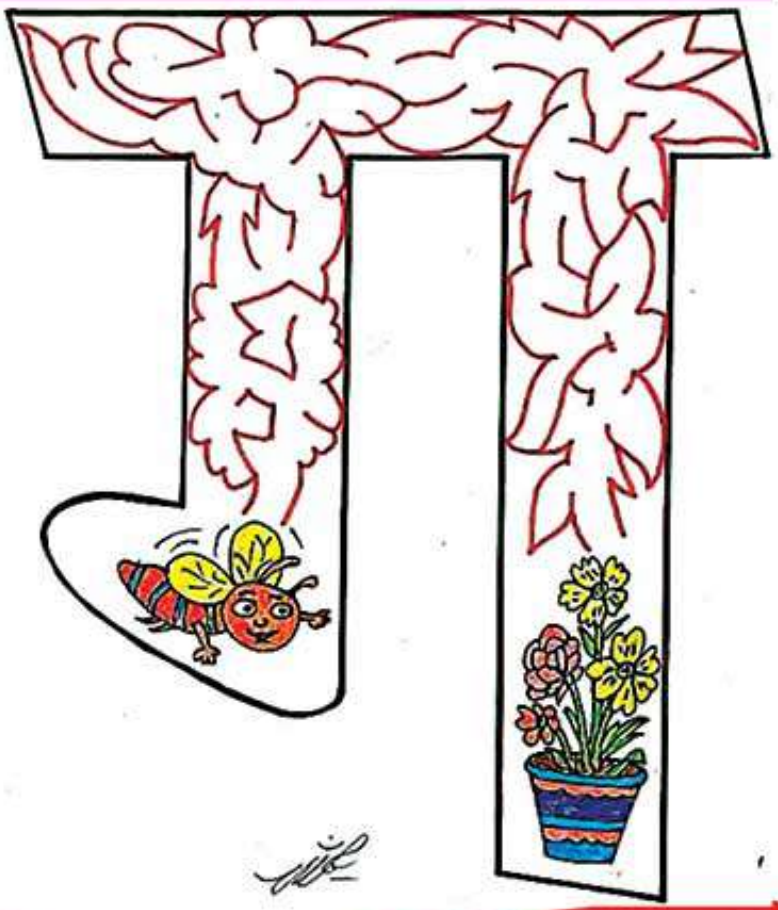

कान्हा : जंगल का रोमांचक अनुभव

– डॉ. कुसुम रानी नैथानी

जबलपुर से कान्हा राष्ट्रीय उद्यान तक की यात्रा मेरे लिए केवल एक यात्रा नहीं थी बल्कि प्रकृति के अनछुए पहलुओं को निकट से देखने का एक सुनहरा अवसर था। जबलपुर में रहते हुए मुझे पता चला कि कान्हा राष्ट्रीय उद्यान यहाँ से लगभग १६० किलोमीटर की दूरी पर है। वन्यजीवों को इतने निकट से देखने का यह मेरा पहला अनुभव होने वाला था। इसलिए रोमांच और उत्सुकता का स्तर बहुत अधिक था।

मध्यप्रदेश का कान्हा राष्ट्रीय उद्यान का कुल क्षेत्रफल १९५० वर्ग किलोमीटर है। यह विस्तृत क्षेत्र मंडला और बालाघाट दोनों जिलों में फैला हुआ है। इसका कोर क्षेत्रफल ९४० वर्ग किलोमीटर और बफर क्षेत्र १००९ वर्ग किलोमीटर का है। यह भारत में बाघों के लिए सबसे उपयुक्त आवासों में से एक है।

कान्हा नेशनल पार्क को १८९७ में एक आरक्षित वन क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया था। १९३३ में इसे वन्य जीव अभयारण्य कहा जाने लगा लेकिन वर्ष १९५५ में इसे एक राष्ट्रीय उद्यान में बदल दिया गया। यहाँ ११५ बाघों का घर है।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में चार प्रमुख सफारी जोन हैं। जिन्हें कोर जोन घोषित किया गया है। यह बाघ अभयारण्य का मध्य भाग है जिसकी सीमा बफर जोन से मिलती है। बफर जोन वह क्षेत्र है जो कोर क्षेत्र से लगा होता है। यहाँ प्राकृतिक संसाधनों भूमि एवं जल का साथ लगे गाँववासियों द्वारा भी उपयोग किया जाता है। इस उद्यान के चार कोर जोन कान्हा, सराही, मुक्की और किसली है। चारों कोर जोन के अलग–अलग प्रवेश द्वार हैं तथा उनके बीच में लगभग

तीस किलोमीटर से लेकर पचास किलोमीटर से अधिक की दूरी है।

अगले दिन हमने तय किया कि हम कान्हा रेंज में खटिया गेट से कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में प्रवेश करेंगे। जबलपुर से कान्हा राष्ट्रीय उद्यान तक की यात्रा मेरे जीवन का एक अद्‌भुत अनुभव था। जब मैंने पहली बार कान्हा नेशनल पार्क के बारे में सुना तो मन में रोमांच और जिज्ञासा ने घर कर लिया। अगले दिन हम दोपहर के समय अपनी कार से वहाँ के लिए रवाना हुए। रास्ते में हरियाली का सुंदर दृश्य देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। जैसे–जैसे हम शहर की भीड़–भाड़ से दूर होते गए वैसे–वैसे प्रकृति का जादू हमारे ऊपर छाने लगा। सड़क के दोनों ओर ऊँचे–ऊँचे साल और बाँस के पेड़ थे जिनके पत्ते हवा में झूम रहे थे। छोटे–छोटे गाँव, खेतों में काम करते किसान और गाय–भैंसों के झुंड देखते हुए हमने यात्रा का आनंद लिया।

लगभग पचास किलोमीटर चलने के बाद हमने एक ढाबे पर रुककर चाय पी। ढाबे के पास खेतों में लहलहाती फसलें किसी पेंटिंग का हिस्सा लग रही थी। वहाँ के लोगों की सादगी और उनका आतिथ्य मन को छू गया।

हम मंडला की ओर बढ़ रहे थे। नेशनल हाईवे छोड़ने के बाद सड़क संकरी और घुमावदार हो गई। सड़क से लगा घना जंगल था और सूरज की रोशनी भी पेड़ों के झुरमुट से छनकर जमीन तक पहुँच रही थी। कार की खिड़की से बाहर झाँकते हुए मैंने अनुभव किया कि यह स्थान सचमुच विशेष है।

रास्ते भर साल के घने जंगलों ने हमारा साथ

दिया। हरे-भरे पेड़ों के बीच में छोटे गाँव और खेतों की शांति ने यात्रा को आनंददायक बना दिया। लगभग साढ़े तीन घंटे के बाद हम मोचा गाँव पहुँचे जहाँ हमने टाइगर वुड रिसॉर्ट में ठहरने का निर्णय लिया। यह जगह न केवल आरामदायक थी बल्कि जंगल के निकट होने के कारण बेहद रोमांचक भी थी।

रात को सन्नाटा इतना गहरा था कि केवल झींगुरों की आवाज सुनाई दे रही थी। ठंड का मौसम था। नवंबर की रात ने हमें ठिठुरने पर मजबूर कर दिया।

अगली सुबह छः बजे हम सफारी के लिए तैयार हो गए। उद्यान घूमने के लिए हमें पहले रजिस्ट्रेशन कराना था। क्योंकि यह अनिवार्य था। खटिया में उनका रजिस्ट्रेशन कार्यालय था वहाँ पर्यटकों की भीड़ लगी थी। जो हमारी ही तरह राष्ट्रीय उद्यान को देखने के लिए उत्सुक थे।

जैसे ही गेट खुला सभी सफारी वाहन एक साथ जंगल में प्रवेश करने लगे। कुछ दूर जाकर वे अपने-अपने जोन की तरह बढ़ गए और हमने गाइड मनोज और ड्राइवर शिवलाल के साथ कान्हा जोन की ओर निकल पड़े। शुरुआत में वीआईपी के लिए एक बहुत ही सुंदर गेस्ट हाउस बना हुआ था। ठंडी सुबह, खुली जीप और चारों ओर का घना जंगल, यह सब कुछ एक अलग ही दुनिया में ले जाने जैसा था। सफारी की स्पीड बीस किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक नहीं रखी जाती ताकि वन्यजीवों को इनसे डर न लगे।

गाइड ने हमें रास्ते भर कान्हा के बारे में ढेर सारी जानकारियाँ दीं। उन्होंने बताया कि इस उद्यान का विशेष आकर्षण बारहसिंगा है जो हर साल अपने सींग गिरा देता है। इन सींगों से बना एक सुंदर गेट रेस्टोरेंट परिसर में उपस्थित था।

जंगल के बीच में कई खुले मैदान थे। उनमें हमने बारहसिंगा का एक झुंड देखा। उनकी चाल में एक अजीब-सा आकर्षण था। गाइड ने बताया कि बारहसिंगा कान्हा की पहचान है और इन्हें बचाने के लिए यहाँ विशेष प्रयास किए जाते हैं। इसके अलावा अन्य मैदानों में हमने चीतल, सांभर, काला हिरण और जंगली सुअर के झुंड भी देखे। कच्चे रास्ते पर सफारी अपनी धीमी चाल से आगे बढ़ रही थी।

रास्ते में दो हाथी जाते हुए दिखाई दिए। गाइड ने पहले ही बता दिया था कि इस उद्यान में हाथी नहीं है। उन्हें देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन पर एक-एक महावत बैठा था जो अपने पैरों की हरकत से हाथी की चलने की दिशा निर्धारित कर रहा था। गाइड हमारी मनोदशा भाँप गया।

उसने हमें बताया कि ये प्रशिक्षित हाथी हैं जो जंगल में रेकी करते हैं जिससे पता लग जाता है कि बाघ कहाँ पर है। यह जानकारी मिलने पर ही सफारी वाहनों को उन क्षेत्रों की ओर ले जाया जाता है। हालाँकि बाघ देखना किस्मत की बात होती है। इसके अलावा वन विभाग के कर्मचारी हाथों में डंडा लेकर वन में घूम रहे थे। इन कर्मचारियों के विश्राम के लिए वन के बीच में कुछ क्वार्टर बना रखे थे जिससे बारी-बारी से विश्राम करते हुए वे वन की निगरानी कर सकें और आवश्यकता पड़ने पर साथियों को बुला सकें।

गाइड ने बताया कि बफर जोन में पहले कई गाँव थे जिन्हें अब विस्थापित करके दूसरी जगह बता दिया गया है। इससे उद्यान का क्षेत्र काफी बढ़कर

सुरक्षित हो गया है। जंगल के अंदर सफारी की सैर करते हुए हमें गाइड ने बाघ के ताजे पदचिह्न दिखाए। यह पदचिह्न देखकर जीप में सवार परिवार के सभी सदस्य उत्साहित हो गए। गाइड ने बताया कि ये पदचिह्न लगभग एक घंटे पुराने हैं। हम सबकी दृष्टि लगातार जंगल में बाघ को खोज रही थी। किन्तु वह कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। तभी अचानक भौंकने जैसी आवाज सुनाई दी। गाइड ने बताया यह बार्किंग डियर की आवाज है।

बाघ को देखते ही यह इस प्रकार से आवाज निकालकर अपने झुंड को सचेत कर देता है। इसका अर्थ है बाघ कहीं आसपास ही है। ड्राइवर ने तुरंत गाड़ी उस दिशा की ओर मोड़ दी जिधर से आवाजें आ रहीं थीं। हमने हिरणों के झुंड को भागते हुए देखा। हमें पूरी आशा थी कि अब हमें बाघ भी दिखाई दे जाएगा किन्तु उसके बाद भी हमें बाघ देखने का अवसर नहीं मिला। कान्हा रेंज में नर्मदा की एक सहायक नदी बंजार नदी है। इसके अलावा छोटे-छोटे नाले हैं जो पूरे जंगल में फैले हुए हैं। इन नालों के पास अक्सर हिरण और अन्य वन्यजीव पानी पीते हुए देखे जा सकते हैं।

गाइड ने बताया कि गर्मियों में जब जंगल में पानी की कमी हो जाती है तब टैंकरों की सहायता से वहाँ बने छोटे-छोटे तालों में पानी पहुँचाया जाता है।

यह उद्यान मिश्रित पर्ण पाती वन है। जंगल का घना भाग साल के पेड़ों से भरा हुआ है जो कान्हा की जैव विविधता का एक महत्वपूर्ण भाग है।

जंगल में साल के अलावा बाँस, तेंदू, जामुन, अर्जुन, लेंडिया के पेड़ थे। यहाँ पर एक हजार से अधिक फूलों की प्रजातियाँ हैं लेकिन इन दिनों उन पर फूल नहीं खिले थे। इन सबके बीच विशेष आकर्षक वाले कुछ अलग ही पेड़ दिखाई दे रहे थे।

गाइड ने बताया यह भूतिया पेड़ हैं। यह सुनकर हम चौंक गए। उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने बताया इसकी विशेषता चिकनी रेशेदार और मोटी छाल है जो हरे भूरे रंग की होती है। छाल की सतही परत बड़े-बड़े गुच्छों में छिल जाती है जिससे एक हल्की निचली परत दिखाई देती है जो चांदनी को परावर्तित करती है। इससे पेड़ को भूतिया चमक मिलती है।

इसका बायोलॉजिकल नेम स्टर्कुलिया यूरेंस है। स्थानीय भाषा में लोग इसे कुलिया का पेड़ कहते हैं। उसकी पत्तियाँ हथेली के आकार की लोब वाली थी जो टहनियों के सिरों पर गुच्छे के रूप में लगीं थीं। यह घोस्ट ट्री प्राकृतिक गोंद पैदा करता है जिसका प्रयोग केक आदि बनाने में किया जाता है। यह गोंद छाल के क्षतिग्रस्त होने पर निकलता है जिसके कारण पेड़ों को नुकसान भी होता है। पहली बार इतना अद्भुत पेड़ देखकर हम सब रोमांचित हो गए।

जंगल में पक्षियों की भी भरमार थी। हमने मालाबार पाइड हॉर्नबिल, इंडियन रोलर और क्रेस्टेड सर्पेंट इंगल जैसे कई दुर्लभ पक्षी देखे। गाइड ने बताया कि यह क्षेत्र पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग जैसा है। नवंबर की सुबह जंगल में सफारी का अनुभव करते समय ठंड अपने चरम पर थी।

खुली जीप में बैठकर सफारी का आनंद लेना जितना रोमांचक था उतना ही ठिठुराने वाला भी। ठंड के बावजूद सफारी का रोमांच हर चीज पर भारी था।

जंगल की सुबह ही सफारी का आनंद लेने के बाद हम जंगल के बीच में बने हुए साफ-सुथरे रेस्टोरेंट पहुँचे। वहाँ हमने नाश्ते का आनंद लिया। इतनी सुबह उठकर भूख भी लग गई थी। आधा घंटा वहाँ बिताकर हमने थोड़ी फोटोग्राफी की।

वहाँ बारहसिंगा के सींगों से बने गेट ने मुझे बेहद प्रभावित किया। यह गेट कान्हा की धरोहर को दर्शाता है। उद्यान के नियमों के अनुसार वन क्षेत्र से किसी भी चीज को उठाना व ले जाना सख्त मना है। यह पर्यावरण संरक्षण का एक अच्छा उदाहरण है। अब हम वापस लौटने लगे। घने साल के पेड़ों के बीच के दृश्य मन मोह लेने वाले थे। लगभग ग्यारह बजे जब सूरज की किरणें जंगल में अपनी चमक बिखेर रही थीं तब साल के लंबे पेड़ों की छाया में वन्यजीवों को आराम करते देखना एक अद्भुत अनुभव था। धूप से बचने के लिए बारहसिंगा का झुंड शांतिपूर्वक पेड़ों के नीचे लेटा हुआ था। उनकी सहजता और सुकून को देखकर लग रहा था जैसे जंगल ही उनका सच्चा घर है जहाँ उन्हें कोई खतरा नहीं।

थोड़ा आगे बढ़ने पर एक और मनमोहक दृश्य देखने को मिला। एक पेड़ के नीचे हिरणों का समूह बैठा हुआ था। मानो वे एक सुरम्य गीत गुनगुना रहे हों। वहीं दूसरी ओर एक अन्य पेड़ की छाँव में सियारों का झुंड आराम कर रहा था। यह दृश्य मुझे विशेषकर इसलिए भी अच्छा लगा क्योंकि सियार जैसा रात्रिचर जीव भी दोपहर में खुले में आराम कर रहा था। यहाँ हर जीव अपने आपको स्वतंत्र और सुरक्षित अनुभव कर रहा था।

इस पूरी यात्रा के समय यह अनुभव पक्का हुआ कि कान्हा राष्ट्रीय उद्यान केवल वन्यजीवों का घर नहीं है बल्कि यह उनकी आजादी, सुरक्षा और शांति का प्रतीक भी है। कोई भी उन्हें डिस्टर्ब नहीं करता और वे अपने प्राकृतिक आवास में पूरी तरह संतुष्ट दिखाई देते हैं। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान की ढेर सारी स्मृति और रोमांचक अनुभवों को अपने साथ समेटे हुए हम आखिरकार खटिया गेट लौट आए।

रिसॉर्ट लौटने के रास्ते में हमें जंगल और गाँव के जीवन के बीच का तालमेल देखने को मिला। हिरणों का झुँड भरी दोपहरी में गाँव वालों के निकट आकर घास चर रहा था। गाइड ने बताया था कि स्थानीय लोग जंगल को अपनी माँ मानते हैं और उसकी रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। गाँव के लोग सादगी और प्रकृति के साथ सामंजस्य में जीवन जीते हैं।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे रोमांचक यात्राओं में से एक थी। यहाँ का हर अनुभव, चाहे वह बारहसिंगा का झुँड देखना हो, ठंडी सुबह की सफारी हो या जंगल के शांत वातावरण का आनंद लेना-हर घटना ने मुझे प्रकृति के निकट ला दिया। यह यात्रा केवल एक यात्रा नहीं थी बल्कि जीवन के लिए एक यादगार सीख भी थी। वहाँ के शांत और सरल वातावरण ने हमें एक बार फिर से दिनभर की यात्रा की थकान भूलने में सहायता की। इस यात्रा ने मुझे प्रकृति के निकट लाकर यह बतलाया कि जंगल और वन्यजीवों को सुरक्षित और संरक्षित रखना बहुत आवश्यक है।

- चुक्खूवाला (उत्तराखण्ड)

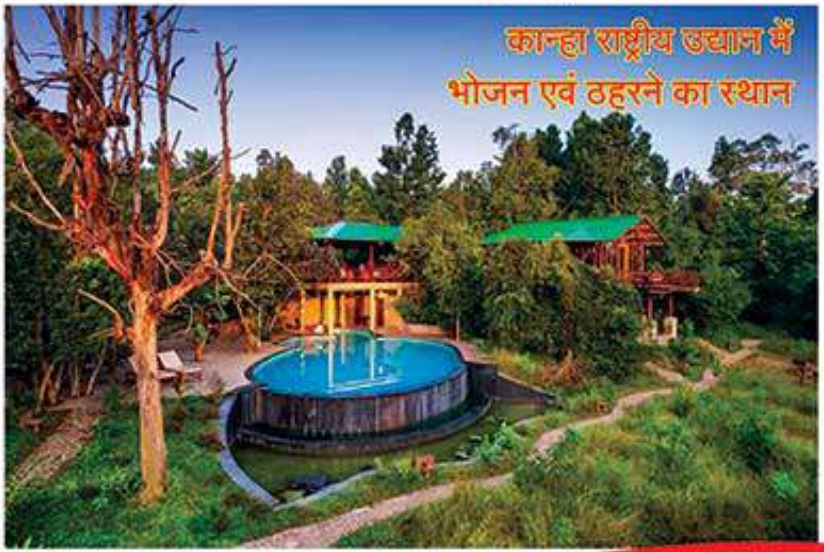

भारत रत्न डॉ. चंद्रशेखर वेंकटरमन

- डॉ. राकेश चक्र

भारत ही नहीं पूरी दुनिया में विख्यात भौतिक वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन (C. V. Raman) को कौन नहीं जानता है? भौतिक विज्ञान, के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय हैं। इन्हें प्रकाश संबंधी खोज के लिए इस पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था। रमन प्रभाव (Raman Effect) के नाम से प्राप्त नोबेल पुरस्कार ने प्रकाश संकीर्ण संबंधी अद्भुत खोज से विश्व को चमत्कृत-सा कर दिया था। सीमित संसाधनों के बीच रहकर इन्होंने वैज्ञानिक पीढ़ी को एक नई दिशा देने का कार्य किया था।

चंद्रशेखर वेंकटरमन का जन्म ७ नवम्बर १८८८ को दक्षिण भारत के तिरुचिरापल्ली के पास छोटे से गाँव में एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता चंद्रशेखर अय्यर भौतिक विज्ञान एवं गणित के विद्वान माने जाते थे। जो कि विशाखापट्टनम् में कॉलेज प्रोफेसर के रूप में कार्य करते थे। उनकी माता का नाम पार्वती अम्मल था। उनका परिवार संगीत में काफी रुचि रखता था। सी. वी. रमन ने घर पर ही रह करके विज्ञान, संस्कृत आदि का ज्ञान प्राप्त किया था।

रमन बचपन से ही काफी होशियार थे। उन्हें बचपन से ही बुद्धिमान कहा जाता था। वह अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आते थे। रमन की रुचि खेलकूद में न थी, बल्कि प्रकृति एवं राशियों को जानने में अधिक रहती थी। जब वह १२ वर्ष के थे तो उसी समय उन्हें स्नातक की पढ़ाई करने के लिए प्रेसिडेंसी कॉलेज भेज दिया गया था। वर्ष १९०५ में उन्होंने अपनी स्नातक की पढ़ाई प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। जिसके लिए उन्हें स्वर्ण पदक भी दिया गया था। इसी के साथ उन्होंने अपनी परास्नातक की पढ़ाई भौतिकी शास्त्र के विषय के रूप में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी।

उस दौरान अँग्रेज इस छोटे से कद के दिखने वाले रमन की अनूठी प्रतिभा देखकर अचंभित थे। इसी वर्ष उनका विवाह कृष्ण अय्यर की पुत्री लोकसुंदरी से हो गया था।

वर्ष १९१० में उनके पिता का देहांत हो गया। उस दौरान वे प्रेसिडेंसी कॉलेज की प्रयोगशाला में कार्य करते रहे। इसके बाद यहीं पर रहकर उन्होंने ध्वनि इसके कंपन और वादियों के सिद्धांतों का अध्ययन किया। यहीं पर उन्होंने वायलिन और सितार पर हारमोनिक्स संगीत संबंधी लेख लिखा जो लंदन में काफी प्रसिद्ध हुआ था। कोलकाता विश्वविद्यालय में उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें भौतिकी के शिक्षक के रूप में नियुक्त कर दिया गया था। यहीं पर रहते हुए रमन भारतीय विज्ञान काँग्रेस के सचिव भी नियुक्त हुए।

वर्ष १९१९ में अमृतलाल सरकार के निधन के बाद रमन ने उनका कार्यभार संभालते हुए विभिन्न वस्तुओं में प्रकाश चलने का अध्ययन किया था। रमन

ने पाया कि प्रकाश समूह बिल्कुल सीधा नहीं चलता और उसका कुछ भाग अपना मार्ग बदलकर बिखर जाता है। भूख–प्यास की चिंता किए बिना कई घंटों तक कार्य करते। अपने प्रयोग से संबंधित उपकरण जुटाने में उन्होंने काफी कठिनाई एवं संघर्ष का सामना किया था।

वर्ष १९२१ में लंदन में उनकी मुलाकात रदरफोर्ड और जे. जे. थॉमसन से हुई थी। उनके द्वारा किए गए प्रयोग एवं परिणाम वहाँ की रॉयल सोसाइटी की पत्रिका में भी छपे थे।

चंद्रशेखर वेंकटरमन का आरंभिक जीवन उन दिनों किसी भी प्रतिभाशाली व्यक्ति का वैज्ञानिक बनना इतना आसान नहीं था। वह दौर था जब भारत में अँग्रेजों का शासन काल था। आधुनिकतम साधनों की काफी कमी हुआ करती थी। जब उन्होंने अपनी परास्नातक की परीक्षा पास की, उसी वर्ष वे भारत सरकार के वित्त विभाग की प्रतियोगिता परीक्षा में बैठ गए। चंद्रशेखर वेंकटरमन प्रतिभा के काफी धनी थे, उसी वर्ष यानी वर्ष १९०७ में असिस्टेंट अकाउंटेंट बन कर कोलकाता चले गए।

उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि आपके जीवन में स्थिरता आ गई है। आप अच्छा वेतन पाएँगे और अकाउंटेंट जनरल बनेंगे। बुढ़ापे में ऊँची पेंशन प्राप्त करेंगे। पर आप एक दिन कार्यालय से लौट रहे थे कि एक साइन बोर्ड देखा, जिस पर लिखा था 'वैज्ञानिक अध्ययन के लिए भारतीय परिषद' यह पढ़कर के मानो उनके शरीर में करंट छू गया हो। तभी वह परिषद के कार्यालय में पहुँच गए। वहाँ पहुँच कर उन्होंने अपना परिचय दिया और परिषद की प्रयोगशाला में प्रयोग करने की आज्ञा पा ली।

इसके बाद उनका स्थानांतरण रंगून हो गया। इसके बाद नागपुर, बाद में उन्होंने अपने ही घर में एक प्रयोगशाला बना ली थी। और समय मिलने पर उसी में प्रयोग किया करते थे। वर्ष १९११ में, उनका स्थानांतरण फिर से कोलकाता हो गया, यहाँ पर उन्हें फिर से प्रयोगशाला में प्रयोग करने का अवसर मिल गया। वर्ष १९१७ में उन्होंने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। इस अवधि के बीच में उन्होंने कई सारे प्रयोग किए थे जिनमें ध्वनि के कंपन और कार्यों का सिद्धांत इत्यादि था।

कोलकाता विश्वविद्यालय में वर्ष १९१७ में भौतिक के प्रधान का पदभार उन्होंने संभाला। वहाँ के कुलपति आशुतोष मुखर्जी ने यह पद स्वीकार करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया था। कोलकाता विश्वविद्यालय में अपने कुछ वर्ष वस्तुओं में प्रकाश के चलने का अध्ययन करते हुए उन्होंने बताया था। यहाँ उन्होंने किरणों का पूर्ण समूह बिल्कुल सीधा नहीं चलता है, बल्कि प्रकाश की किरणें अपना रास्ता बदल देती हैं इस बारे में शोध किया था। वर्ष १९२१ में चंद्रशेखर रमन विश्वविद्यालय की काँग्रेस में प्रतिनिधि बन गए। इसके बाद यह ऑक्सफोर्ड चले गए। विदेश से वापस लौटते समय उन्होंने समुद्र के जल को नीला व दूधियापन देखा था। तभी उन्होंने यह पता लगा लिया था कि समुद्र का नीलापन आसमान के नीले होने के कारण से नहीं दिखता। बल्कि पानी में उपस्थित कण के कारण दिखाई देता है। इस दौरान वे लगातार शोधकार्य में लगे रहे। और रमन प्रभाव के बारे में पता लगाया। वर्ष १९२७ में इस बात पर आपका ध्यान दिया की एक्स–रे किरणें प्रकीर्ण होती हैं, तो उनकी तरंग लंबाई बदल जाती है। तब प्रश्न उठा कि साधारण प्रकाश में भी ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए।

रमन ने फिर इनके ऊपर कार्य करना शुरू कर दिया। अपने पारद आर्क के प्रकाश का स्पेक्ट्रोस्कॉपी निर्मित किया। इन दोनों के मध्य विभिन्न प्रकार के रासायनिक पदार्थ रखे तथा पारद आर्क के प्रकाश को उनमें से गुजर कर स्पेक्ट्रम बनाएँ। रमन ने पाया कि हर एक स्पेक्ट्रम में कुछ ना कुछ अंतर था। हर एक

पदार्थ अपनी–अपनी प्रकार का अंतर डालता है। तब श्रेष्ठ स्पेक्ट्रम चित्र तैयार किया गया, उन्हें मापकर और गणना करके उनकी सैद्धांतिक व्याख्या की गई। प्रमाणित किया गया कि यह अंतर पारद प्रकाश की तरंग लंबाई में परिवर्तित होने का कारण पड़ता है।

⁕ वेंकटरमन वर्ष १९२८ में अनुसंधान के लिए रॉयल सोसायटी लंदन के फेलो बन गए।

⁕ रमन प्रभाव या रमन इफेक्ट के लिए वर्ष १९३० में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किए गए।

⁕ चंद्रशेखर वेंकटरमन, पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

⁕ वर्ष १९४८ सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने रमन शोध संस्थान बेंगलूरु स्थापना की। इसी संस्थान में शोध करते रहे।

⁕ वर्ष १९५४ में भारत सरकार द्वारा भारतरत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया।

⁕ वर्ष १९५७ में लेलिन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

⁕ २८ फरवरी १९२८ को चंद्रशेखर वेंकटरमन ने रमन प्रभाव की खोज की थी। जिसकी याद में भारत में इस दिन को प्रत्येक वर्ष 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

बौद्धिक क्रीडा

कहानी पहेली

– प्रकाश तातेड़

निम्नलिखित कहानी के वाक्यों में २० रिक्त स्थान है। इनमें ऐसा उपयुक्त शब्द भरना है जो चार अक्षर का और बिना मात्रा का हो।

शिवरात्रि के .... पर हम .... के समीप स्थित .... महादेव के दर्शन के लिए रवाना हुए। रास्ते में हम एक .... के वृक्ष की छाया में रुके। वहाँ हमने ठंडा .... पिया। तभी हमारे ड्राइवर .... को उस विशाल वृक्ष की एक डाल पर बड़ा–सा .... लिपटा हुआ दिखाई दिया। सब .... के मारे .... भागे। हम .... गाड़ी में बैठे और रवाना हुए।

यह मंदिर एक पहाड़ी पर था। हम .... ऊपर पहुँचे तो .... चूर हो गए। मंदिर के ऊपर .... लहरा रहा था। मंदिर में पार्वती व गणपति की मूर्ति के भी दर्शन किए। वहाँ आसापास का दृश्य .... था। मंदिर के पास पेड़ व फूल की झाड़ियों से एक .... बना हुआ था।

कुछ देर वहाँ ठहर कर हम रवाना हुए और होटल .... पर रुके। वहाँ हमने .... दाल और .... की सब्जी के साथ रोटी खाई। इस प्रकार हम रात को ९ .... ३० मिनट पर घर लौटे।

– उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर माला– अवसर, अलवर, हरहर, बरगद, शरबत, दलपत, अजगर, दहशत, सरपट, झटपट, चढ़कर, थककर, परचम, मनहर, उपवन, सरगम, अरहर, कटहल, बजकर।

इस तरह बनाओ

भेड़

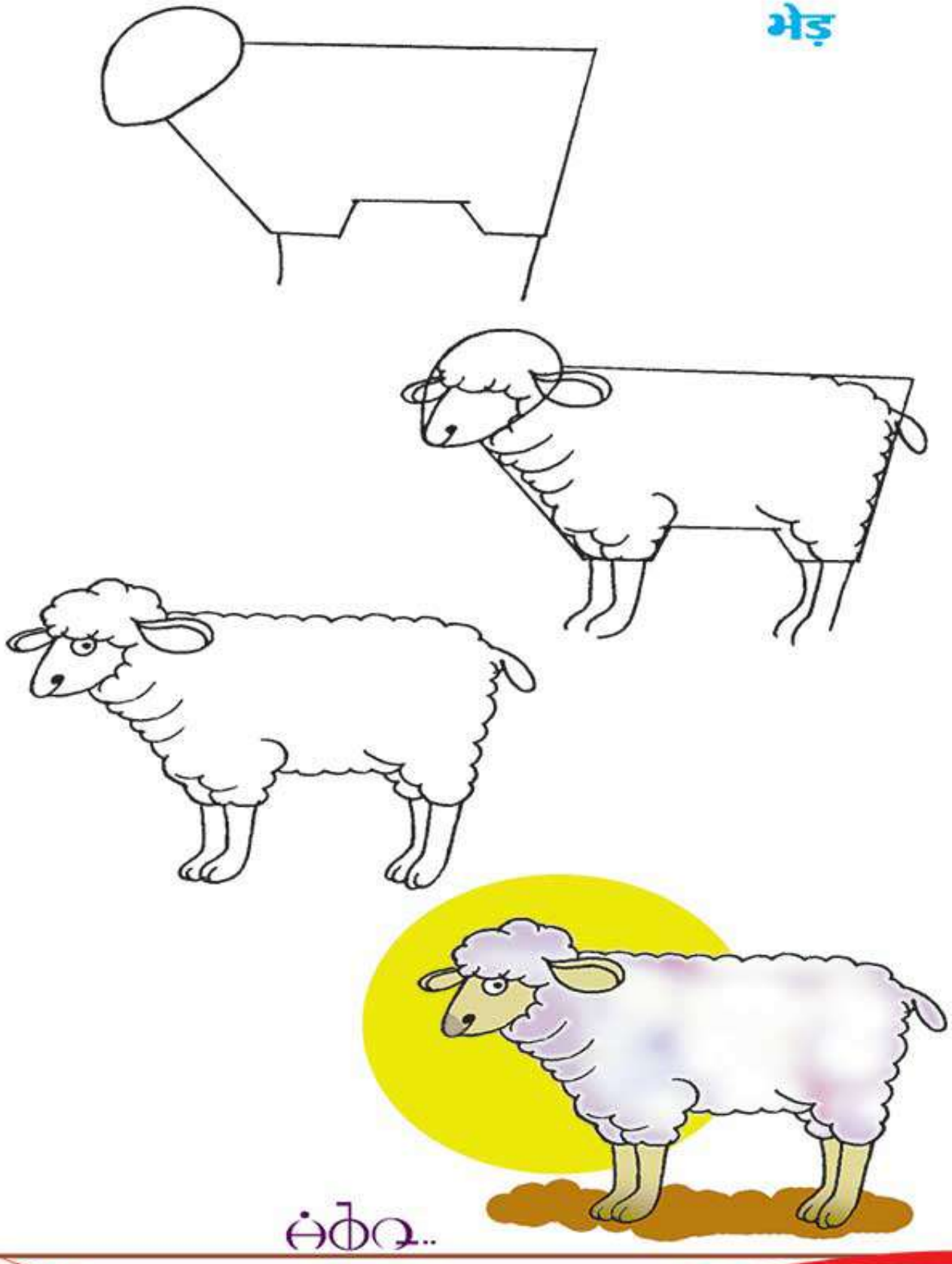

जरासंध की उत्पत्ति

– मोहनलाल जोशी

एक राजा था। उसके कोई संतान नहीं थी। उनको एक ऋषि ने एक फल दिया। राजा से कहा– ''यह फल रानी को खिला देना। तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा।''

राजा के दो रानियाँ थीं। उन्होंने फल के दो टुकड़े किये। दोनों ने एक–एक टुकड़ा खा लिया। कुछ समय बाद दोनों के पुत्र हुए। परन्तु दोनों बालक आधे–आधे थे। उनका शरीर दो भागों में बँटा हुआ था। रानियाँ यह देखकर डर गई। उन्होंने बालकों को महल से बाहर फेंक दिया।

वहाँ एक जरा नाम की राक्षसी आयी। उसने बालक के टुकड़े देखे। जरा ने अपनी माया से दोनों को जोड़ दिया इससे एक पूर्ण बालक बन गया। वह रोने लगा। जरा ने उसे राजा को सौंप दिया। बालक का नाम जरासंध प्रसिद्ध हुआ। जरासंध बहुत ही पराक्रमी राजा बना।

जरासंध वध

जरासंध ने सत्रह बार कृष्ण और बलराम की सेना को हराया था। उसने सैकड़ों राजाओं को बंदी बना लिया था। जरासंध उन राजाओं की बलि देना चाहता था।

कृष्ण भगवान ने युधिष्ठिर को कहा– ''राजसूय यज्ञ करने के लिये सभी राजाओं को जीतना पड़ता है। मुझे, अर्जुन को और भीम को मगध देश भेजो। भीम जरासंध का वध कर देगा। फिर राजसूय यज्ञ कर सकते हैं।''

कृष्ण, अर्जुन और भीमसेन मधग देश जाने लगे। अनेक पर्वत, नदियाँ पार कर वे मगध पहुँच गए। रात को यज्ञशाला में विश्राम किया। वे ब्राह्मण वेश बनाकर गये थे। यज्ञशाला में जरासंध मिला। कृष्ण ने अपना परिचय दिया। जरासंध को मल्ल युद्ध करने को कहा। भीम और जरासंध में भीषण युद्ध हुआ। भीम ने जरासंध के दो टुकड़े कर दिए। उन टुकड़ों को दूर–दूर फेंक दिया। वे टुकड़े जुड़कर पुन: एक हो जाते व जरासंध जीवित हो उठता। तब कृष्ण के संकेत पर भीम ने वे टुकड़े अलग–अलग दिशा में फेंके। उसकी मृत्यु हो गयी। कृष्ण ने बंदी राजाओं को मुक्त कर दिया। वे सभी मुक्त होकर अपने–अपने राज्य चले गए।

– बाड़मेर (राजस्थान)

अँधेरा भी चाहिए

– डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

परीक्षा आने वाली है। और आज फिर बिजली गुल हो गई। बार–बार बिजली जाने से न केवल पढ़ने वाले, बल्कि घर–गृहस्थी के सारे काम प्रभावित हो जाते हैं। इधर तो खेत से पशु, घर लौटते हैं, माताएँ–बहनें भोजन की तैयारी शुरू करती हैं, बच्चे पढ़ने बैठते हैं, उधर से बिजली छू–मंतर।

शेखर, एक छोटे से कस्बे नुमा गाँव अनूपपुरा का रहने वाला, बारहवीं कक्षा का वि ार्थी था। इसी वर्ष बारहवीं की परीक्षा में बैठा था। रिजल्ट भी आ ही जाएगा। पर अभी तो मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहा है। उसके पिताजी भारतीय सेना में मेजर हैं। कभी–कभार घर पर आते हैं। घर पर अपने दादू, माँ तथा छोटी बहन के साथ रहता है।

शेखर पढ़ने में बहुत होशियार, समझदार लड़का है। बस किताबें और वह। और किसी से कुछ मतलब नहीं। जब पढ़ता और पढ़ने बैठता तो मानो दुनिया के किसी भी व्यक्ति से कोई लेना–देना नहीं। पर इसे किताबी कीड़ा भी नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि पढ़ने के अतिरिक्त ये अपने दादू के साथ खेत पर भी जाता है।

नोहरे पर भी जाता है, गाय–भैंसों की देखभाल, खेती–बाड़ी में माँ की सहायता, मित्रों के साथ घूमना–फिरना, सब थोड़ा–बहुत करता ही है। पर अभी चूँकि परीक्षा आ रही है। अत: सब कुछ छोड़–छाड़कर केवल पढ़ाई ही पढ़ाई।

जब, पंद्रह–बीस मिनिट तक लाइट नहीं आई तो, वह उठा और दादू को पुकारा– ''दादा! वो इमरजेंसी लाईट कहाँ हैं। लाईट का तो कोई भरोसा नहीं है।''

उसके दादाजी, रामलुभाया जी, जो हिंदी विषय के शिक्षक रह चुके हैं। सेवानिवृत्ति के बाद खेती–बाड़ी, पशु–पालन और समाज सेवा में रुचि लेते रहते हैं। गाँव के गणमान्यों में आते हैं। जब एक बार में दादाजी नहीं बोले, तो फिर पुकारा, तब दादू ने शेखर को कहा– ''अरे! बेटा, इस बिजली का तो कोई भरोसा नहीं हैं। कल ही ए. ई. साहब मिले थे। कह रहे थे कि गाँव में बड़ा बिजली का ग्रिड पास हो गया हैं। उसका काम चल रहा है। इसीलिए महीने–पंद्रह दिन बिजली का आना–जाना ऐसे ही लगे रहेगा।''

''अरे! पर शेखर, एक बात तो मैं भूल ही गया। कल बाड़े में गाय बाँधने गया था। अपनी किसान टॉर्च, वहीं भूल आया। चलो, दस–पंद्रह मिनिट घूमना भी हो जाएगा और टॉर्च भी ले आएँ।''

दादू ने शेखर को आग्रह किया तो शेखर भी बाड़े की ओर चलने को राजी हो गया। दादा और पोते की दोस्ती का तो पूरा जमाना गवाह होता है। मूल से भी अधिक ब्याज प्यारा लगता है। रामलुभाया जी भी अपने पुत्र के प्रेम को पोते में ही प्रकट करते थे। और शेखर भी अपने दादू को बहुत चाहता था।

रामलुभाया जी अपने पोते शेखर के साथ गायें बाँधने के बाड़े की ओर निकल पड़े। बाड़ा घर से लगभग पाँच सौ-सात सौ मीटर की दूरी पर था। गाँव, कस्बे व शहर का मिला जुला था। उनका यह रहवास स्थान। किसी का कोई डर नहीं, ना अनावश्यक ट्रेफिक, ना चोर-उचक्के, हाँ कभी-कभार बरसात के मौसम में साँप-बिच्छू अवश्य निकल आते थे।

दोनों दादा-पोता अँधेरे में बाड़े की ओर निकल पड़े। अँधेरे में भी पहली बार, शेखर को उजाले सा अनुभव हो रहा था। एक-दो मिनिट बाद ही, उसे अँधेरे में भी, रास्ता ठीक-ठाक दिखाई देने लगा। यूँ तो हल्की-सी चाँदनी भी थी, पर फिर भी अँधेरे में देखने में उसे आनन्द आ रहा था।

''दादू! आज पहली बार मुझे अनुभव हो रहा है कि हम अँधेरे में भी काम चलाऊ तो देख ही सकते हैं। देखो! रास्ता, रास्ते में पड़े पत्थर, वह दूर बैठा कुत्ता, कुत्ते की चमकती हरी-लाल आँखें, सब कुछ दिखाई दे रहा है।'' शेखर ने आश्चर्य से कहा।

''बिल्कुल बेटे! अँधेरा भी प्रकृति का महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य अंग है। देखो, ऊपर आकाश को। आकाश में तारे, आकाशगंगा, नक्षत्र आदि भी कितने साफ-साफ और सुंदर दिख रहे हैं। यह सब अँधेरे का ही कमाल है।''

''जी! दादू, आप ठीक कह रहे हैं। मैंने तो एक दिन मेरे विज्ञान के आचार्य जी से यह भी सुना था कि आजकल पृ वी, पुराने-जाने पहचाने प्रदूषणों के साथ-साथ एक नये प्रदूषण से और प्रभावित हो रही हैं वह प्रकाश प्रदूषण हैं। अब यह क्या नई बला है, दादाजी!'' शेखर ने जिज्ञासा प्रकट की।

तो दादाजी! चलते-चलते ही बताने लगे। ''बेटा! जिस प्रकार संसार को उजाले की आवश्यकता होती है। ठीक उसी प्रकार अँधकार भी होना ही चाहिए। अँधकार में ही जीव-जन्तु, कीट-पतंगे, वृक्ष-लताएँ, पक्षी, मनुष्य सभी आराम करते हैं। नींद निकालते हैं। उनकी जैव क्रियाएँ, विभि हार्मोन का स्त्रावण विकास आदि उपापचयी काम होते हैं। अब, इन दिनों भाग-दौड़ और आपाधापी में मनुष्य लगातार काम करने की होड़ में लगा है। देर रात तक और वहीं-कहीं तो रातभर फैक्ट्रियाँ, मशीनें, रेलगाड़ियाँ, बसें, हवाई जहाज चलते ही रहते हैं। उनकी हेड लाईट, शहरों में लगी रोड लाईटें, बड़ी-

बड़ी फ्लड लाईटें, समुद्री प्रकाश स्तम्भ और तेज रोशनी से मनुष्य ही नहीं, सारे जीव-जंतु बड़े प्रभावित हो रहे हैं। छोटी चिड़ियाएँ, पतंगे, कीट, पक्षी, पशु आदि बेचारे तो तेज-तेज लाईटों में भ्रमित हो जाते हैं, वे समझ ही नहीं पाते हैं कि अभी दिन हैं कि रात है। और उनकी सारी गतिविधियाँ प्रकाश का प्रदूषण लील रहा हैं।''

''अच्छा! तो ये रोशनी इतनी खतरनाक हैं। मैं तो इसे हल्के में समझ रहा था।'' ''क्यों भाई! हल्का कैसे? रात को सोते समय, तुम तेज बल्ब जलाकर सोते हो कि जीरो वाट का नाईट बल्ब लगाकर?''

जिस प्रकार हम, तेज प्रकाश में नींद नहीं ले पाते हैं, ठीक वैसे ही सूक्ष्म जीव-जन्तुओं के साथ-साथ पेड़-पौधे, वृक्ष, मानव, पालतू और जंगली जानवर भी इस तेज रोशनी से बहुत परेशान रहते हैं।'' दादाजी ने बड़ी सुन्दरता से शेखर को समझाया, तब तक बाड़ा भी आ गया। वहाँ देखा अँधेरे में गायें आराम कर रही थीं। पर जैसे ही इमरजेंसी टॉर्च की लाईट उन पर पड़ी वे चौंक कर खूँटे पर रँभाने लगीं।

टॉर्च लेकर, दादाजी और शेखर फिर घर की ओर लौटने लगे। रास्ते में शेखर ने पूछ ही लिया- ''तो क्या हम तेज लाईटों को बंद ही कर दें दादू?''

''अरे भाई! नहीं, मैंने ऐसा कब कहा। बस अति सबकी बुरी है। जब आवश्यकता नहीं हो तो अनावश्यक प्रकाश नहीं होना चाहिए। रातभर जलने वाली फ्लड और हाई मास्ट लाईटों से जानवरों तथा मनुष्यों में चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, बैचेनी, हॉर्ट रेट में बढ़ोतरी, तनाव बढ़ना, शारीरिक थकावट और आँखों में समस्या आदि होने लगती है। जंगल में तथा जानवरों के बाड़ों में तो तेज रोशनी होनी ही नहीं चाहिए।''

अब शेखर धीरे-धीरे समझता जा रहा था। जिस अँधेरे को भला-बुरा कहकर उसे सदैव डराया गया था, वह तो बहुत उपयोगी निकला।

घर की ओर लौटे तब तक, लाईट भी आ चुकी थी। दादाजी को शेखर ने कहा- ''देखो दादू! आपने मुझे बहुत अच्छा समझाया है। अब मैं भी विदेशों की तरह अँधानुकरण में नहीं पड़ूँगा। कभी-कभी ब्लैक हावर (एक घंटे की बिजली से छुट्टी) रखूँगा तथा तेज लाईट जलाकर जीव-जन्तुओं को अनावश्यक परेशान नहीं करूँगा।

बिल्कुल बेटा! वैज्ञानिक तो यह तक कह रहे हैं कि ऐसे ही रोशनी का प्रदूषण जारी रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब आकाश के तारे दिखना ही बंद हो जाएँगे। जीव-जन्तुओं की परिस्थिति ही बिगड़ जाएगी।''

''नहीं-नहीं दादाजी! अब ऐसा नहीं होगा।'' और उसने जोर से नारा लगाया- ''अँधेरा कायम रहे। कायम रहे।''

दोनों दादा-पोता ठहाका मारकर हँस पड़े।

- भीलवाड़ा (राजस्थान)

पहेली

बूझो उनका नाम सादर करो प्रणाम

हाथ न आए अँग्रेजों के,
बने आत्म बलिदानी।
वे प्रयाग की पावन भू पर,
अमर बने सेनानी।
आजादी के लिए लड़े वे,
आजादी हित प्राण दिए।
मध्यप्रदेश की धरा पे जन्में,
रहे जलाते क्रांति दिये।
सत्ताईस फरवरी उनका,
था पावन बलिदान दिवस।
मातृभूमि हित भेंट चढ़ाया,
था जिनने जीवन सरबस।

पुत्री मुक्ता का विवाह

– अरविन्द जवळेकर

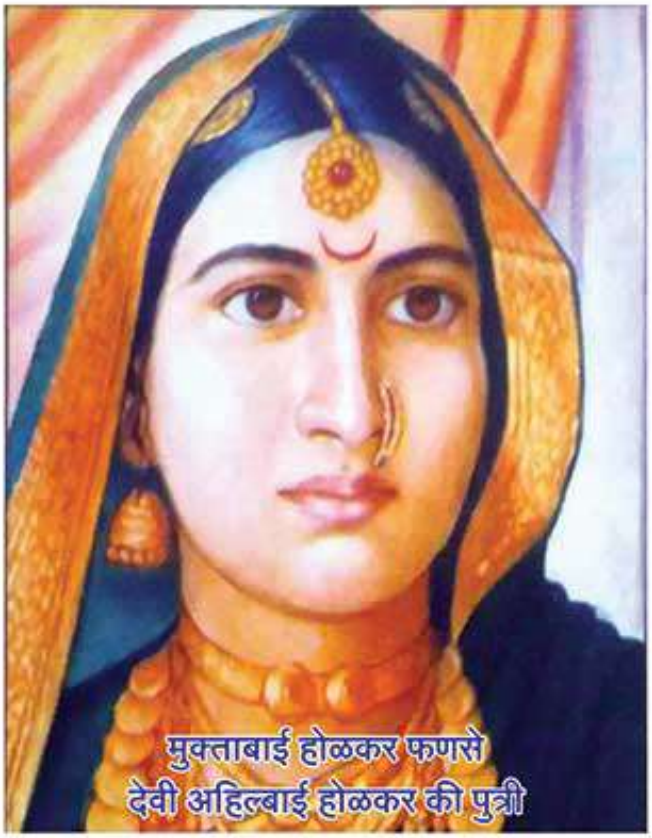
मुक्ताबाई होळकर फणसे
देवी अहिल्बाई होळकर की पुत्री

उनकी पुत्री मुक्ता अब सयानी हो गई थी। उन्हें उसके विवाह के लिए उपयुक्त वर खोजना था। उन दिनों राज्य में डकैतियाँ बहुत हो रही थीं।

अहिल्या माता ने अपने राज–दरबार में उपस्थित सरदारों और सेना अधिकारियों के समक्ष घोषणा कर दी कि– ''हमें इन डाकुओं का आतंक समाप्त करना है। यदि कोई युवा सेना अधिकारी इस कार्य को सफलता पूर्वक कर देगा तो मैं अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दूँगी।''

जाति–पाती का विचार किए बिना केवल वीरता के आधार पर अपनी बेटी के लिए वर का चयन करना अहिल्या माता की महानता बताता है। उनके दरबार में उपस्थित एक युवा सेना अधिकारी यशवंत राव फणसे ने उठकर इस कार्य का बीड़ा उठाने का संकल्प लिया। और थोड़े समय में ही राज्य से डाकुओं के आतंक को समाप्त कर दिया।

माता अहिल्या ने भी अपने वचन का पालन करते हुए उसके साथ अपनी बेटी का विवाह कर दिया।

विद्रोह का दमन

अहिल्या माता द्वारा सत्ता सम्हालते ही उन्हें कमजोर समझकर सीमावर्ती क्षेत्र के शासक चंद्रावत ने उनके विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाकर स्वतंत्र होने का प्रयास किया। किन्तु अहिल्या माता ने अपनी सेना के साथ वहाँ जाकर उसके विद्रोह को निर्ममता के साथ कुचल कर यह साबित कर दिया कि वे जितनी कोमल हृदय हैं उतनी ही कर्त्तव्य कठोर भी हैं।

उनके समय में चंद्रावतों ने तीन बार विद्रोह किया किन्तु तीनों ही बार अहिल्या माता ने उसे कुचल कर अपने मजबूत शासन का परिचय दिया।

– इन्दौर (म. प्र.)

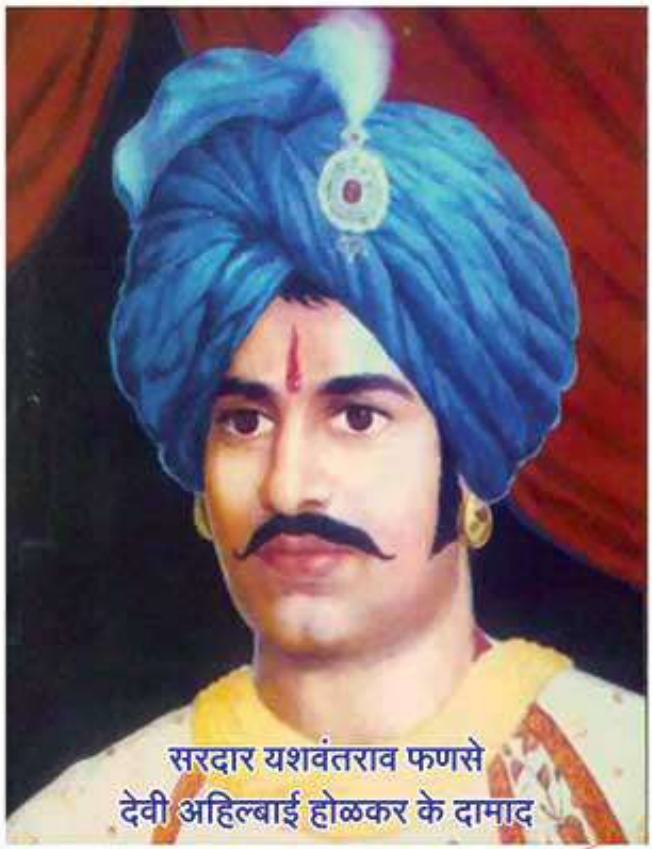
सरदार यशवंतराव फणसे
देवी अहिल्बाई होळकर के दामाद

किताबी कीड़े मत बनो

– घमंडीलाल अग्रवाल

पात्र परिचय

नेमि शरण – दादाजी, आयु ७५ वर्ष।
सुरीना – माँ! आयु ४५ वर्ष।
चारु – पुत्र! आयु १५ वर्ष।
माधव – मित्र! आयु १४ वर्ष।
सुभाष – मित्र! आयु १४ वर्ष।

(परदा खुलता है। शाम के चार बजे का समय। मंच पर एक अध्ययन कक्ष का दृश्य। चारू पढ़ाई में व्यस्त है। माँ आवाज लगाती है।)

माँ– चारु बेटे! चाय बन गयी है। ले जाओ।

चारु– रुक जाओ माँ! एक प्रश्न और रह गया है। यह गणित का प्रश्न तो हल ही नहीं हो रहा मुआ।

माँ– (पुन: बोलती है) बेटे! पहले चाय पी लो। फिर फ्रेश दिमाग से प्रश्न निकालना।

चारु– नहीं माँ! अभी मेरा मन बना हुआ है। प्रश्न निकालकर ही चाय पीऊँगा।

माँ– बेटे! चाय ठंडी हो जाएगी।

चारु– पुन: गर्म कर देना।

माँ– मेरी बात क्यों नहीं मानते हो। क्या बुकवर्म बने हुए हो?

चारु– (हैरानी से) बुकवर्म?

माँ– हाँ नहीं तो।

चारु– ये बुकवर्म किसे कहते हैं?

माँ– (प्यार से) बताती हूँ।

(तभी ड्राईंग रूम में बैठे हुए दादाजी उठकर चारु के पास पहुँचते हैं।)

दादाजी– मैं समझाता हूँ इसे।

चारु– (दादाजी को देखकर) प्रणाम दादाजी!

दादाजी– (हाथ उठाकर) प्रसन्न रहो।

चारु– पानी पिएँगे या चाय?

दादाजी– कुछ नहीं! मैं तो तुम्हें समझाने के लिए आया हूँ।

चारु– क्या समझाने? प्रश्न समझाएँगे मुझे?

दादाजी– चल पागल! मैं तुम्हें 'बुकवर्म' के बारे में जानकारी दूँगा।

चारु– (किताब को एक किनारे रखकर) तो समझाइए?

दादाजी– पहले चाय पी लो। जाओ, लेकर आओ।

(चारु माँ से चाय लेकर आता है। जल्दी–जल्दी चाय पीकर दादाजी के सामने बैठता है।)

चारु– अब बोलिए दादाजी!

दादाजी– (उत्सुकता से) देखो! 'बुकवर्म' अँग्रेजी का शब्द है जिसका अर्थ होता है– पुस्तक कीट। सरल बोलचाल में 'किताबी कीड़ा' भी कहते हैं। 'किताबी कीड़ा होना' एक हिन्दी मुहावरा भी है

जिसका अर्थ है– हमेशा किताब में खोए रहना। अर्थात् जो बच्चा सदा किताबों में ही खोया रहता है, उसे 'बुकवर्म' की संज्ञा दी जाती है।

चारु– (आश्चर्य से) लेकिन किताबों से तो हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। फिर, किताबों में खोए रहने को 'किताबी कीड़ा होना' क्यों कहते हैं?

दादाजी– जैसे कीड़ा किताब में लग जाए तो उसे नष्ट कर देता है, ठीक वैसे ही बच्चे भी जब किताबों से ही चिपके रहें तो अपना नुकसान करते हैं।

चारु– कौन–सा नुकसान दादाजी?

दादाजी– तुम्हें इस बारे में विस्तार से समझाता हूँमैं।

चारु– (प्रसन्न मुद्रा में) जी, दादाजी!

दादाजी– पहला नुकसान तो यह है कि दूसरे लोगों से संपर्क कट जाता है या कम हो जाता है।

चारु– (माथे पर हाथ रखते हुए) इसीलिए मेरे सारे मित्र मुझसे कतराते हैं व बात तक नहीं करते हैं।

दादाजी– ठीक समझा तुमने।

चारु– और!

दादाजी– दूसरा बड़ा नुकसान है– 'अनिद्रा'। दिन–रात पढ़ने से रात को नींद भी भली–भाँति नहीं आ पाती है।

चारु– हाँ दादाजी! मैं अधिकांश रात को दो बजे ही उठ जाता हूँ। उसके बाद मुझे नींद नहीं आती है। मैं आँखें बंद करके बिस्तर पर पड़ा रहता हूँ।

दादाजी– तीसरा नुकसान है– 'तनाव'। बुकवर्म कहलाने वाला बच्चा तनाव का शिकार हो जाता है। उसे कोई भी चीज अच्छी नहीं लगती है। केवल अपने आप में ही गुम रहता है वह तो।

चारु– जी!

दादाजी– 'शारीरिक दुर्बलता' भी बुकवर्म बनने का ही दुष्परिणाम होती है। चेहरा कांतिहीन लगने लगता है। और आँखें धँसी–धँसी सी। हाथ–पाँवों में भी मानो जान–सी नहीं रहती है।

चारु– (हामी भरते हुए) बिलकुल ठीक कहा। मैं भी सोचूँ कि मेरी हालत ऐसी क्यों होती जा रही है।

दादाजी– और हाँ! शरीर का समुचित विकास भी अवरुद्ध होने लगता है जिसका नुकसान बड़े होकर भुगतना पड़ता है।

चारु– ठीक कहा, दादाजी!

दादाजी– (प्रसन्न होकर) क्या तुमने यह कविता नहीं पढ़ी?

तुम बनो किताबों के कीड़े
हम खेल रहे मैदानों में!
तुम रहो रात–दिन अँग्रेजी,
कह ए. बी. सी. डी. ई. एफ. जी,
हम तान मिलाते हैं कू–कू–
करती कोयल की तानों में!
तुम दुबले–पतले दीन–हीन,
हम शैतानों के नेता हैं–
पर पास सदा इम्तिहानों में!

तुम लिए किताबों का बोझा,
हम उछल–कूद खाते–गोझा,
तुममें हममें है भेद वही–
जो मूर्खों में, विद्वानों में!

चारु– हाँ पढ़ी है। इसे तो सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार निरंकार देव सेवक ने लिखा है।

दादाजी– फिर भी, तुम किताबी कीड़े बने हुए हो?

चारु– तो, क्या करूँ दादाजी?

दादाजी– मैं बताता हूँ तुम्हें उपाय? (कुछ देर रुककर)।

दादाजी– तो सुनो! सुबह–सुबह उठकर सैर के लिए जाओ और व्यायाम भी करो। इससे शरीर सुदृढ़ बनेगा तथा दिमाग में नए विचार आएँगे।

चारु– (हामी भरते हुए) ठीक है।

दादाजी– शाम को मित्रों के साथ मनपसंद खेल भी खेलो। क्योंकि खेल हमारे जीवन का हिस्सा हैं। इससे शरीर को बल मिलता है।

चारु– लेकिन यह कहा गया है–
पढ़ोगे–लिखोगे बनोगे नवाब,
खेलोगे–कूदोगे होंगे खराब।

दादाजी– (प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए) अरे! तुम भी कौन–से जमाने के हो। ये कथन तो पुराना हो गया। आजकल तो खेलों में आगे बढ़ने के अवसर उपस्थित हैं। खिलाड़ियों को नौकरियों में वरीयता भी मिलती है और प्रोत्साहन राशि भी। पी. टी. उषा, सुनील गावस्कर, कपिल देव, सचिन तेंडुलकर जैसे खिलाड़ी हमारे देश के गौरव हैं।

चारु– ओह! मैं तो भूल ही गया।

दादाजी– जूडो–कराटे भी सीखना चाहिए तुम्हें। ताकि संकट के समय साथ मिल सके इनका।

चारु– वाह दादाजी!

दादाजी– आज की सदी विज्ञान की सदी है। कम्प्यूटर का ज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक है। तभी तुम समय के साथ कदम मिलाकर चल पाओगे। देखते नहीं, हम चाँद पर भी जा पहुँचे हैं और दूसरे ग्रहों पर भी जाने की तैयारी में हैं।

चारु– अच्छा दादाजी!

दादाजी– गायन, वादन, अभिनय आदि में भी पारंगत होना आज के समय की माँग है। जानते हो क्यों?

चारु– क्यों?

दादाजी– नौकरियों में साक्षात्कार के समय पढ़ाई के अलावा अन्य योग्यताएँ काम जो आती हैं, इसलिए! इनके अंक निर्धारित होते हैं। कल ही विद्यालय के आगामी समारोह में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भागीदारी में अपना नाम लिखवा देना तथा अभ्यास भी करना।

चारु– जी, बहुत अच्छा!

दादाजी– कला का क्षेत्र व्यापक होता है। इसमें भी कैरियर बनाया जा सकता है।

(दादाजी ये बातें समझा ही रहे थे कि पड़ोस में रहने वाले दो बच्चे माधव और सुभाष आते हैं।)

दादाजी– ये देखो! तुम्हारे मित्र भी कितने सही समय पर आए हैं।

दोनों– प्रणाम दादाजी!

दादाजी– प्रणाम बच्चो, प्रसन्न रहो। क्या खेलने के लिए जा रहे हो?

दोनों– हाँ, दादाजी! हम तो चारू को भी ले जाना चाहते हैं किन्तु यह चलता ही नहीं है।

दादाजी– (चारू से) जाओ बेटा! आज से तुम प्रतिदिन शाम को खेलने जाया करो।

(चारु में आए परिवर्तन को देख दोनों प्रसन्न होते हैं। दादाजी बोलते हैं।)

दादाजी– (पुन: स्मरण कराते हुए) बुकवर्म नहीं, आलराउंडर बनो। (सभी मिलकर हँसते हैं।)

(परदा गिरता है।)

– गुरुग्राम (हरियाणा)

कोई क्यों नहीं घुमाता!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

पत्र – नर्मदा जयंती : ४ फरवरी

नानी की चिट्ठी

– डॉ. विमला भण्डारी

प्रिय दोहिती मंजुला!

पिछली बार जब मैंने तुम्हारी माँ को पत्र लिखा था तो उस पत्र को देखकर अपनी माँ से भी अधिक तुम प्रसन्न हुई थी। वह पत्र तुम्हें किसी आश्चर्य की तरह लगा था।

पत्र पढ़कर तुमने मुझसे फोन पर बात की थी। और कहा था कि मैं तुम्हें कोई अच्छा पत्र लिखूँ। जिसे तुम अपने पास नानी की धरोहर के रूप में संभाल कर रखना चाहोगी।

कल ही प्रवास से लौटी हूँ तो तुम्हारी बात स्मरण हो आई और मैं तुम्हें पत्र लिखने बैठी हूँ। जैसा कि तुम्हें ज्ञात है कि इस बार मैं इन्दौर होकर आ रही हूँ। इन्दौर में मेरा मिलना वैसे तो कई लोगों से हुआ किन्तु जिसने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी मैं उसके बारे में तुम्हें विस्तार से बताती हूँ–

इन्दौर में मैं जिससे मिली और जिसके बारे में, मैं बात बताने जा रही हूँ उसे हम सब 'माँ' कहते हैं। तुम सोच रही होगी परन्तु शायद ही अनुमान लगा पाओगी। अच्छा मैं ही बता देती हूँ।

मैं नर्मदा नदी की बात कर रही हूँ। तुम्हारे नाना को ओमकारेश्वर ज्योर्तिलिंग के दर्शन करने थे। दर्शन से पूर्व वह नर्मदा नदी में स्नान करना चाहते थे।

अत: हम नर्मदा नदी के गोमुख पर नहाने के लिए रुके। मैं बाहर किनारे बैठी रही और तुम्हारे नाना पानी में उतर गए। जब उन्होंने नदी में पहली डुबकी लगाई तो मुझे एक आवाज सुनाई दी। छपाक...! मुझे लगा कोई मुझे कुछ कह रहा है। मेरा ध्यान सामने पानी की ओर था। मुझे फिर से वही दोबारा आवाज सुनाई दी जो कह रही थी–

''मैं भारत की सात प्रमुख नदियों में से हूँ। गंगा के बाद मेरा ही महत्व है। हजारों वर्षों से मैं पौराणिक गाथाओं में स्थान पाती रही हूँ। पुराणों में मुझ पर जितना लिखा गया उतना और किसी नदी पर नहीं। पुराण कहते हैं कि जो पुण्य गंगा में स्नान करने से मिलता है, वह मेरे दर्शन मात्र से मिल जाता है। तुम एक लेखिका हो इसलिए तुम्हें यह सब बता रही हूँ।''

''क्या वाकई में आप मुझसे बात कर रही है माँ नर्मदा?'' मेरे भीतर से एक मौन प्रश्न उठा जो आँखों से होता हुआ नदी के पानी को छूने लगा। मेरे प्रश्न को पानी ने पढ़ लिया था वह मुस्कुराकर बोला–

''तुमने मुझे माँ कहा, मेरे जल को अमृत माना और स्नान करने चले आए हो तो सुनो– वर्षों से मेरे तट पर मनुष्य ने तपस्या की है। आश्रम बनाए जो तीर्थ बन गए। मेरे तट के छोटे से छोटे तृण और छोटे से छोटे कण न जाने कितने परिव्राजकों (संन्यासी, भिक्षुक), ऋषि–मुनियों और साधु–संतों की पदधूलि से पावन हुए। मुझे चिरकुमारी कहा। मेरी

परिक्रमा करने की परम्परा चलाई। तुम्हारे इस देश के करोड़ों निवासियों के लिए मैं केवल नदी नहीं, माँ हूँ। श्रद्धा की यह सुखद अनुभूति मेरे लिए अनंत काल तक काफी होगी।'' क्या देखती हूँ नदी का नीला पानी बूँदों के रूप में ठठाकर ऊपर उठता हुआ प्रसन्नता बिखेर रहा था।

वाह! वाह! कितना सुखद लगा मुझे उस समय, मैं तुम्हें बता नहीं सकती। मैंने अपने दोनों हाथ उठाकर जोड़ दिए और नदी माँ को नमस्कार किया। मेरी विनम्रता और आस्था देखकर माँ नर्मदा का मन गदगद् हो आया। उछलते हुए पानी की बूँदें मुझे स्पर्श कर गई। मानो वह मुझसे साक्षात् मिल रही है, ''तुम लेखक लोग भी बहुत संवेदनशील होते हो। आज तक मैंने अपनी बात किसी को नहीं बताई पर आज तुम्हारी संवेदना को देखकर बात करने का मन हो रहा है।''

मैंने भी आँखों ही आँखों में माँ नर्मदा से कहा– ''तो कहो ना माँ! अपने मन की बात।'' तब माँ नर्मदा की लहरों ने एक उछाल भरी और मुझे लगा जैसे वह मुझसे बतियाने के लिए मेरे पास चली आयी है। वह मुझे कहने लगी और मैं सुनने लगी। हो सकता है तुम्हें मेरी बात काल्पनिक लगे या मेरे मन का भ्रम लगे। किन्तु जब तुम बड़ी होकर इसकी खोज–परख करोगी तो तुम्हें यह बात वास्तविक लगेगी। इसीलिए आज तुम्हें यह सब पत्र पर लिख रही हूँ। तो बताती हूँ तुम्हें वह बातें जो नर्मदा नदी ने मुझे कही थी उस समय जब मैं उसके किनारे बैठी उसे निहार रही थी–

नर्मदा का पानी मुझे कहने लगा– ''पानी की हर बूँद एक चमत्कार है। हवा के बाद पानी ही मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है। किन्तु पानी दिन पर दिन दुर्बल होता जा रहा है। नदियाँ सूख रही है। उपजाऊ जमीन बंजर हो रही है। आए दिन अकाल पड़ रहे हैं। मुझे खेद है, यह सब मनुष्यों के अविवेकपूर्ण व्यवहार के कारण हो रहा है। अभी भी समय है। वन–विनाश बंद करो। बादलों को बरसने दो। नदियों को स्वच्छ रहने दो। केवल मेरे प्रति ही नहीं, समस्त प्रकृति के प्रति प्यार और निष्ठा की भावना रखो। यह मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मुझे तुमसे अत्यधिक प्रेम है। प्रसन्न रहो मेरे बच्चो!

'ओह यह क्या सुन रही हूँ मैं?' सहसा मुझे विश्वास नहीं हुआ किन्तु वह निश्छल जल अभी भी मुझे कह रहा है था–

''आज मेरे तटवर्ती प्रदेश काफी बदल गए हैं। मेरी वन्य एवं पर्वतीय रमणीयता बहुत कम रह गई है। मुझे दु:ख है कि मेरे घने जंगल जड़ से काटे जा रहे हैं। पहले इन जंगलों में जंगली जानवरों की गरज सुनाई देती थी, अब पक्षियों का कलरव तक सुनाई नहीं

देता। उन दिनों मेरे तट पर पशु-पक्षियों का राज्य था, लेकिन उसमें आदमी के लिए भी स्थान था। अब आदमी का राज्य हो गया है, लेकिन उसमें पशु-पक्षी के लिए कोई स्थान नहीं है।''

''उफ्!'' माँ नर्मदा की बात सुनकर मेरा मन भावुक हो उठा।

''सुनो विमला! मेरा पानी भी उतना निर्मल और पारदर्शी नहीं रहा। फूलों और दूर्वादलों से सुवासित स्वच्छ हवा भी नहीं रही।''

''आप सही कह रही हैं आपकी पीड़ा मुझे समझ आ रही है।'' मैंने प्रत्युत्तर दिया तो वह फिर कहने लगी-

''इन दिनों मुझ पर कई बाँध बाँधे जा रहे हैं। बाँध में बँधना भला किसे अच्छा लगेगा। फिर मैं तो स्वच्छंद हरिणी-सी हूँ। मेरे लिए तो यह और भी कष्टप्रद है। इससे मेरी प्राचीन युग की स्वच्छंदता चली जाएगी।

किन्तु, जब अकाल-ग्रस्त भूखे-प्यासे लोगों को, पानी और चारे के लिए तड़पते पशुओं को और बंजर पड़े खेतों को देखती हूँ, तो मेरा मन रो उठता है। आखिर मैं माँ हूँ। अपनी संतान को तड़पता कैसे देख सकती हूँ। इसलिए मैंने इन बाँधों को स्वीकार कर लिया। अभी तक मैं दौड़ के आनन्द के लिए दौड़ती थी। अब धरती की प्यास बुझाने के आनंद के लिए दौड़ूँगी भी और ठहरूँगी भी। सरोवर बनाऊँगी। नहरों के माध्यम से खेतों की प्यास बुझाऊँगी। धरती को सुजला-सुफला बनाऊँगी।''

तभी तुम्हारे नाना स्नान करके तट पर आ गए माँ नर्मदा से बात करने का क्रम टूट गया। यह पत्र तुम संभाल कर रखना मेरी बच्ची। बड़ी होकर शायद तुम नर्मदा नदी का दु:ख दूर करने में सहायता कर सको।

मंजुला तुम्हें कोई संशय तो नहीं कि नर्मदा नदी को जब मैंने माँ कहकर प्रणाम किया तो उन्होंने मुझसे यह बातचीत की। अपने विचार मुझे बताना और हाँ इस पत्र को अवश्य संभालकर रखना।

- तुम्हारी नानी
डॉ. विमला भण्डारी
सलूम्बर (राजस्थान)

कुत्ते-सियार भी रोएँगे

- तपेश भौमिक

गोपाल बचपन से ही होनहार बालक था। लेकिन पढ़ने-लिखने में उसका जरा भी मन नहीं लगता था। इसलिए उसके पिता उससे दु:खी रहते थे। वे क्रोध में आकर प्राय: यह कहते थे कि मेरे मर जाने पर तेरे दु:ख के कारण कुत्ते-सियार भी रोएँगे।

जैसा गोपाल के पिता कहते थे विधि का विधान भी वैसा ही हुआ। अचानक उनकी मृत्यु हो गई। श्राद्धकर्म के दिन लोग आ-जा रहे थे। प्राय: सभी लोग गोपाल को सांत्वना के साथ-साथ आर्थिक सहायता भी कर रहे थे। जिनको जैसा बन पड़ता वे वैसा ही दान दे रहे थे एवं हिम्मत बढ़ाते रहते थे।

इसी बीच एक सूदखोर महाजन भी गोपाल को सांत्वना देने के लिए आगे आया। गोपाल के पिता प्राय: उससे पैसे उधार लिया करते थे। कभी-कभी सूद की रकम चुकाने में देर-सवेर हो जाती या उधारी की रकम ही बढ़ जाती तो गोपाल के पिता के साथ उसकी तू-तू, मैं-मैं हो जाती।

महाजन ने गोपाल को सांत्वना देते हुए कहा- ''इस छोटी-सी आयु में ही तुम्हारे पापी पिता तुम्हें छोड़कर चले गए। अब तुम्हीं कहो कि तुम्हें कितनी

परेशानी होगी! होगी न?''

''आपने मेरे पिताजी को पापी क्यों कहा?'' गोपाल ने चिढ़ कर कहा।

''ऐसे बाल आयु में बच्चों को संसार-सागर में छोड़कर जाने वाला पापी ही कहलाएगा। मैं किसी की झूठी प्रशंसा नहीं करता। ऐसे व्यक्ति को पापी नहीं तो और क्या कहेंगे?''

दरअसल वह गोपाल के पिता द्वारा उधार लिए गए पैसे वसूलना चाहता था। उस समय लोग बालक गोपाल को रुपए-पैसे देकर सहायता कर रहे थे।

धूर्त महाजन इस अवसर का लाभ उठाने का सुनहरा समय अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहता था। अब तक गोपाल ने यह भाँप लिया था कि महाजन कुछ झूठ-सच कहकर उसे ठगना चाहता है।

उसने बिना कोई देर किए महाजन से विनम्र होकर कहा- ''मैं यह भूल ही गया था कि आप हमारे बड़े मददगार हैं। आप अन्य लोगों की भाँति सहायता करने के लिए आए हैं।''

इतना सुनना था कि लोग महाजन की जय-जयकार करने लगे। अब धूर्त महाजन अपनी बगलें झाँकने लगा। 'अब लेने के देने पड़ने की नौबत आ गई।' वह अपने ही बिछाए जाल में फँस चुका था। वह न चाहते हुए भी लोगों के बीच अपनी साख बनाए रखना चाहता था। उसने अपनी जेब से कुछ रकम निकालकर गोपाल को दे दी। तो गोपाल ने भी बनावटी खुशी प्रकट करते हुए कहा- ''पिताजी ने कई बार मुझ पर क्रोधित होकर कहा था कि उनके मरने पर कुत्ते-सियार भी मेरे दु:ख पर रोएँगे। उनकी बात सच हो गई।''

- गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)

बूझो उनका नाम सादर करो प्रणाम का उत्तर

अमर बलिदानी
चंद्रशेखर आजाद

अपने को छोटा मत समझो

– विमला रस्तोगी

आज सिद्धार्थ का मूड उखड़ा हुआ था। न पढ़ने में मन लगता था न खेलने में। कभी माँ पर झुंझलाता कभी स्वयं पर। वह गया ही क्यों वैभव के घर? फिर सोचता वैभव उसे कई दिन से बुला रहा था। शायद अपने पिताजी से जन्मदिन पर मिला छोटा–सा टी. वी. मुझे दिखाना चाहता था। सिद्धार्थ वह सब सोच ही रहा था कि माँ ने उससे पूछा– ''आज तुम वैभव के घर किसी काम से गए थे?''

''मेरा कोई काम नहीं था, वहीं बुला रहा था। माँ वैभव का कमरा बहुत सुंदर है, जैसा उसका पलंग है वैसे ही रंग का मेज कुर्सी है, वैसी ही अलमारी है।''

''अभी दो वर्ष ही हुए हैं उसकी कोठी को बने हुए।''

''उससे क्या होता है। उसकी एक अलमारी अच्छे–अच्छे खिलौनों से भरी है। उसके जन्मदिन पर उसके पिताजी ने उसे टी. वी. उपहार में दिया है।''

''जिस पर दिखाने लायक चीजें होगी? दिखाएगा भी वही।'' सिद्धार्थ ने आक्रोश में कहा।

''देखो सिद्धार्थ, मैं तुम्हें पहले भी समझा चुकी हूँ किसी की बराबरी करना ठीक नहीं। हम बहुत से अच्छे हैं। इंसान केवल पैसे से नहीं अपनी योग्यता से बड़ा बनता है। तुम वैभव के साथ अच्छे विद्यालय से शिक्षा पा रहे हो यह क्या कम है?''

''वह अपनी रईसी की तड़ी झाड़ता है।''

''झाड़ने दो। तुम अपने को छोटा मत समझो। मेहनत करके पढ़ो। विद्यालय की हर गतिविधि में भाग लो, दूसरों को देखकर ईर्ष्या मत करो।''

विद्यालय में सिद्धार्थ की गिनती बुद्धिमान लड़कों में होती थी। माँ के समझाने के बाद सिद्धार्थ हर काम को अधिक मेहनत और लगन से करने लगा। विद्यालय में होने वाली खेल–प्रतियोगिता में इस बार उसने सबसे अधिक पुरस्कार जीते थे।

एक दिन सिद्धार्थ विद्यालय के लिए तैयार हो रहा था कि वैभव आया। सुबह–सुबह वैभव को अपने घर देखकर सिद्धार्थ हैरान हुआ– ''क्या बात है वैभव, कुछ परेशान हो?''

''सिद्धार्थ! आज हमारा ड्राइवर नहीं आया, पिताजी बैंगलूरू गए हुए हैं, समझ में नहीं आता मैं विद्यालय कैसे जाऊँगा?''

''बस से चले जाओ।''

''मैं कभी बस से गया ही नहीं। सुबह के समय बसों में भीड़ होती है।''

''ऐसा नहीं है, मैं तो प्रतिदिन जाता हूँ। तुम मेरे साथ चलना। बैग लेकर आ जाओ।''

वैभव सिद्धार्थ के साथ स्टाप पहुँचा। वहाँ खड़ी भीड़ को देखकर उसकी घबराहट बढ़ गई। तभी बस आकर रुकी। लोग दौड़े। सिद्धार्थ ने वैभव से चढ़ने को कहा, लेकिन वैभव चढ़ न सका। सिद्धार्थ चढ़ गया।

बस चल दी। सिद्धार्थ जोर से चिल्लाया– ''बस रोको! मेरा मित्र नीचे रह गया।'' बस रुकी। सिद्धार्थ भागकर वैभव को अपने साथ लाया। उसे बस में चढ़ाकर स्वयं चढ़ा। विद्यालय पहुँचकर वैभव ने सिद्धार्थ को धन्यवाद दिया।

''आज तुम न होते तो मेरा पेपर छूट जाता।''

''उस बात को छोड़, यह बता पेपर कैसा हुआ?''

''ठीक हो गया।'' वैभव ने कहा और सिद्धार्थ के साथ ही घर वापिस आया। अर्द्धवार्षिक परीक्षा में सिद्धार्थ और वैभव अक्सर आपस में बात करते थे। वैभव ने कई बार सिद्धार्थ से कहा कि उसके साथ गाड़ी में ही विद्यालय चला करें, पर सिद्धार्थ ने साफ मना कर दिया।

''बड़े दिन की छुट्टियों में एक सप्ताह के लिए

कैंप लगेगा। विस्तार से जानकारी कार्यालय से प्राप्त करें।'' प्रधानाचार्य जी की इस घोषणा से वैभव को चिंतित कर दिया।

''अरे सिद्धार्थ! सुना तुमने, कैंप लग रहा है?''

''हाँ! कक्षा छः और सात के विद्यार्थियों को कैंप में जाना आवश्यक है।''

''क्या? पर मैं तो बड़े दिन की छुट्टियों में मामाजी के घर जाने वाला था।''

''मामाजी के घर फिर चले जाना। कैंप में सबके साथ रहने में बड़ा आनन्द आएगा।''

''यह कैंप क्यों लगाया जा रहा है?'' वैभव ने पूछा।

''शिक्षक जी बता रहे थे कि कैंप का उद्देश्य है विद्यार्थियों को अपने काम स्वयं करने की आदत डालना, मिलजुल कर रहना सीखना, अनुशासन और योग सीखना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना। अरे यार मुँह क्यों लटक रहा है कैंप में चलकर देखना तुझे भी अच्छा लगेगा।'' सिद्धार्थ ने वैभव को समझाया। उसके बाद भी सिद्धार्थ कैंप में जाने के लिए वैभव का मनोबल बढ़ाता रहा।

कैंप में सिद्धार्थ प्रत्येक गतिविधि में बढ़-चढ़कर भाग लेता रहा। वैभव जल्दी थक जाता था। उसे काम करने का बिलकुल अभ्यास न था। एक दिन खेलते हुए वैभव के पैर में मोच आ गई। तुरन्त उसे प्राथमिक चिकित्सा दे दी गई।

''देखा! उस दिन तुमने पैर में दर्द का बहाना बनाया। आज सचमुच तेरे पैर में मोच आ गई।''

सिद्धार्थ ने वैभव को अपने कंधे का सहारा देते हुए कहा।

''तुम ठीक कहते हो। मुझे झूठ बोलने का फल मिल गया।''

''घबराने की बात नहीं है वैभव! मैं हूँ न तुम्हारे साथ।'' कहकर सिद्धार्थ ने वैभव को हिम्मत बँधाई।

मोच आने के बाद से वैभव ने अनुभव किया कि सिद्धार्थ हर समय उस सहयोग देने को तत्पर रहता है। वह किसी के काम को मना नहीं करता। उस सब प्यार करते हैं वह सबको प्यार करता है।

धीरे-धीरे वैभव के पैर का दर्द कम होने लगा। घर लौटने का दिन भी आ गया। सिद्धार्थ को कैंप में सबसे अच्छे विद्यार्थी का पुरस्कार मिला। वाद-विवाद प्रतियोगिता और खेलों में भी उसने पुरस्कार जीते। कैंप में रहकर वैभव ने भी कई अच्छी बातें सीखीं। उसने बढ़-चढ़कर बातें करनी छोड़ दीं।

घर आकर सिद्धार्थ ने माँ को पुरस्कार दिखाएँ। माँ ने उसको गले से लगाकर माथा चूम लिया।

- दिल्ली

सदाबहार बाल कविताओं के सर्जक : राजनारायण चौधरी

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

राजनारायण चौधरी हिंदी बाल कविता के सशक्त हस्ताक्षर थे। उन्होंने नए–नए विषयों पर छंद की दृष्टि चुस्त और दुरुस्त कविताएँ लिखीं। अपने जमाने में वे पत्र–पत्रिकाओं में छाए रहे। सच, उन्हें सदाबहार बाल कविताओं का सर्जक कहा जा सकता है।

राज नारायण चौधरी जी का जन्म ३ फरवरी, १९३८ ई. को समस्तीपुर बिहार के नरहन स्टेट में हुआ। उनके पिता बाघो चौधरी और माता युगेश्वरी देवी बड़े ही संस्कारी दंपती थे।

चौधरी जी ने बड़ों के गीत और बच्चों की लाजवाब कविताएँ रचीं। विषयगत नवीनता और शिल्पगत मौलिकता के कारण उनकी बाल कविताओं की अलग ही पहचान बनी। उनकी कल्पना–शक्ति अद्भुत थी और प्रस्तुतीकरण की शैली अनूठी। उनकी कविताएँ अपनी रससिद्धता के कारण बाल–समाज में खूब लोकप्रिय हुई।

चौधरी जी किशोरावस्था में साहित्य सृजन की ओर उन्मुख हो गए थे। १९५७ में बड़ों के लिए उनकी एक पुस्तक 'प्रेम–गीत' भी प्रकाशित हो गई थी। बच्चों के लिए उनकी पुस्तकें तो देर में आईं लेकिन उनकी कविताएँ पत्र–पत्रिकाओं में छाई रहीं।

दीप हमारे बच्चे सारे, पराग, झूमें नाचें गायें हम, अगड़म–बगड़म ना ना ना उनकी बाल कविताओं की पुस्तकें हैं। उन्होंने बच्चों के लिए कहानियाँ भी लिखीं। 'पंख किसने रंगे हैं' उनकी बाल कहानियों का संग्रह है।

चौधरी जी को बाल साहित्य के क्षेत्र में अभिनव योगदान के लिए भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, नागरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया, मनीषिका, कोलकाता इत्यादि संस्थाओं से सम्मानित भी किया गया।

२९ अप्रैल, २०१७ को हाजीपुर में उनका निधन हो गया।

अपनी अविस्मरणीय रससिद्ध बाल कविताओं के लिए वे सदैव सम्मान के साथ स्मरण किए जाएँगे।

आइए, पढ़ते हैं उनकी रोचक बाल कविताएँ–

फूलों की बस्ती

होती जो फूलों की बस्ती।
नदी, झील, घाटी, पर्वत, वन
खुशबू में उतराते हर क्षण।
चारों ओर बरसती मस्ती।
घर आँगन तितली हो जाते,
पंख पसारे मन को भाते।
चिड़िया–सी हर गली चहकती।
हम सारे बच्चे मंडराते,
भौरों से गुन–गुन–गुन गाते।
खुश होते सब, दुनिया हँसती।
सूरज, चंदा, तारे आते,
आकर सपनों में खो जाते।
दिशा–दिशा बौराई लगती।
होती जो फूलों की बस्ती।

होते जो.....

होते जो बिस्कुट के पेड़।
दौड़-दौड़कर जाते हम सब,
तोड़-तोड़कर खाते।
माँ-पिताजी की खातिर
जेबों में भरकर लाते
करते नहीं जरा भी देर।
अगर लताओं में टॉफी के
गुच्छे लटके होते।
माँ से पैसे न माँगते
और नहीं हम रोते।
लेते तोड़ पाँच-छ: सेर।
लड्डू पेड़ा बरफी चमचम
की जो होती खेती।
दादी माँ चोरी-चोरी नित
झोले में भर देती।
होता घर में इनका ढेर।

कली की सहेली

इन तितलियों के न तुम
तोड़ो सलोने पर।
ये बहुत निश्छल बड़ी
प्यारी परी-सी हैं।
नेक भोली हैं बड़ी सीधी
डरी-सी हैं।
प्यार से चूमो इन्हें
दो स्नेह से उर भर।
बाग की मलिका, सहेली
ये कली की हैं।
खुशी सबकी और शोभा
हर गली की हैं।
दो इन्हें उड़ने जहाँ तक
जा सकें उड़कर।

अगड़म-बगड़म ना-ना-ना

अगड़म-बगड़म ना-ना-ना।
छोड़ो खाना जहाँ कहीं,
चाट-पकौड़े? नहीं-नहीं।
बासी-तासी क्या खाना?
अगड़म-बगड़म ना-ना-ना।
जो बच्चे रहते गंदे-
समझे जाते बेढंगे।
कसें सभी उन पर ताना,
अगड़म-बगड़म ना-ना-ना।
बैठो खूब तरीके से,
बातें करो सलीके से।
छोड़ो जब-तब झुंझलाना,
अगड़म-बगड़म ना-ना-ना।
अच्छी-अच्छी बात पढ़ो,
अच्छे पथ पर चला करो।
पड़े न पीछे पछताना,
अगड़म-बगड़म ना-ना-ना।

बादल जी

बड्डी–बड्डी चित्त–कबड्डी
खेल रे हैं बादल जी।
आँधी और बवंडर सबको
झेल रहे हैं बादल जी।
हाथी भेड़ बकरियाँ बनकर
दौड़ रहे हैं बादल जी।
ऊँचे–ऊँचे महल बना फिर
तोड़ रहे हैं बादल जी।
कर के खूब अँधेरा सबको
सता रहे हैं बादल जी।
टॉर्च जलाकर कभी राह फिर
दिखा रहे हैं बादल जी।
कभी लरजकर कभी गरजकर,
डरा रहे हैं बादल जी।
और कभी आँखों से आँसू
गिरा रहे हैं बादल जी।

सूरज धूप उगाना जी

सूरज धूप उगाना जी
काँप रहे हैं नाना जी।
नानी खों–खों करें रात भर,
उनकी जान बचाना जी।
हाँफ रहे हैं ताल तलैया–
किरणों से सहलाना जी।
ओ, कुहासा, कुहरा भागे ;
ऐसी नजर दिखाना जी।
शीत लहर की चले न कुछ भी
आ कर धौंस जमाना जी।
आखिर जल्दी पड़ी तुम्हें क्या ?
ठहर देर तक जाना जी।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

प्रातः चर्या (२)

– डॉ. मनोहर भण्डारी

दातुन – सप्ताह में एक या दो बार एक चौथाई चम्मच सरसों के तेल में एक–एक चुटकी पीसी हल्दी और सेंधा नमक मिलाकर ५ मिनिट तक मध्यमा अँगुली से दांतों और मसूड़ों की मालिश करें। नीम की कोमल टहनी से की गई दातुन डायबिटीज और हाई ब्लडप्रेशर से रक्षा करती है। शोधकर्ताओं के अनुसार नीम की टहनी दाँतों तथा मुँह के स्वास्थ्य के लिए भी हितकारी होती है।

ब्रिटिश डेंटल जर्नल और जर्नल फ्रंटियर्स इन सेल्युलर एण्ड इन्फेक्शन माइक्रोंबायोलाजी में प्रकाशित रिसर्च के अनुसार माउथ वाश में ९९% बैक्टीरिया को मारने की क्षमता है। मित्र जीवाणुओं के मर जाने से मधुमेह और उच्च रक्तचाप से बचाने की प्राकृतिक व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

लेखक ने इस रिसर्च को पढ़ने के बाद पेस्ट करना त्याग दिया है। अपने ब्रश को हर तीन महीने में बदलने और ब्रश को शौचालय में कदापि न रखें। कोलगेट टूथपेस्ट में एस. एल. एस. रसायन होता है। अतएव कोलगेट का उपयोग करने से पूर्व हाउ सेफ इज द सोडियम सल्फेट इन टूथपेस्ट (एस. एल. एस.) को गुगल पर पढ़ना अच्छा रहेगा।

माता–पिता और बड़ों को करें प्रणाम और आशीर्वाद पाएँ– माता–पिता का आशीर्वाद सदा ही सकारात्मक विचारों और ऊर्जा के रूप में हमें मिलता है। **द प्रास्पेरिटी सीक्रेट्स ऑफ द एजेज** नामक अपनी पुस्तक में **कैथनरीन पांडर** ने लिखा है कि आशीर्वाद एक बहुत ही शक्तिशाली उपहार है, जो कई गुना सफलता दिलाता है। आशीर्वाद किसी व्यक्ति या वस्तु के लिए सकारात्मक प्रार्थना करने का बहुत ही सरल तरीका है।

अपने बच्चों, जीवनसाथी और प्रियजन को गले लगाएँ– गले लगाने से ऑक्सीटोसिन निकलता है, जो सामाजिक अनुबंध में महती भूमिका निभाता है। तनाव, चिंता और हृदय गति तथा रक्तचाप को कम करता है। मस्तिष्क से दर्दनाशक एंडोर्फिन भी निकलता है, जो प्रसन्नता और फीलगुड के लिए जिम्मेदार है। रोगी प्रियजनों को गले लगाने से उनके स्वस्थ होने की गति तेज हो जाती है। बीमार ही नहीं अपितु स्वस्थ संतानों, परिजनों और मित्रों को भी गले लगाना मनोशारीरिक और पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से अच्छा रहता है।

– इन्दौर (म. प्र.)

सेवा कार्य

– नारायण चौहान

मेरे प्यारे बच्चो!

नमस्कार,

जैसे–जैसे मेरे काम का विस्तार होता गया वैसे–वैसे देश और परिस्थितियों के अनुसार मेरे कार्य का स्वरूप भी बदलता चला गया। देश में सेवा और शिक्षा की आवश्यकता थी। तब मेरे स्वयंसेवकों ने ऐसे संगठन प्रारंभ किए जो शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के लिए देशभर में काम कर सके।

मैं अपने सेवा कार्यों के बारे में आपको विस्तार पूर्वक बताता हूँ।

सेवा कार्यों का उद्देश्य– सेवा कार्य मुख्यत: समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुँचाने, आत्मनिर्भरता बढ़ाने और राष्ट्रभक्ति की भावना को जाग्रत करने के उद्देश्य से संचालित होता है।

सेवा कार्यों के मुख्य क्षेत्र

शिक्षा क्षेत्र में कार्य– मेरे स्वयंसेवकों द्वारा हजारों विद्यालय और छात्रावास संचालित किए जाते हैं। जिनका उद्देश्य वनवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करना है। जैसे–

एकल विद्यालय योजना– यह योजना विशेष रूप से ग्रामीण और वनवासी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए आरंभ की गई है।

विद्या भारती– इसके अन्तर्गत देशभर में कई शैक्षणिक संस्थान संचालित हैं।

आजीविका और कौशल विकास– युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कौशल विकास केंद्र स्थापित किए गए हैं।

स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए संघ विभिन्न योजनाओं का संचालन करता है।

प्राकृतिक आपदाओं में सहायता जब–जब भी कोई आपदा देश के ऊपर आई मैंने बिना किसी प्रकार का भेदभाव किए हमेशा मानवता के लिए सेवा की है।

भूकंप, बाढ़, सूखा या अन्य आपदाओं में मेरे स्वयंसेवक तुरंत राहत कार्य में जुट जाते हैं। महाराष्ट्र के लातूर और गुजरात के भुज में आए भूकंप से हुई जन, धन हानि के समय मेरे स्वयंसेवकों ने निष्ठा पूर्वक पीड़ित समाज की सेवा की है।

राहत शिविरों, भोजन वितरण और पुनर्वास में संघ की भूमिका सराहनीय रही है। २००१ का भुज भूकंप (गुजरात): संघ के स्वयंसेवकों ने तत्काल राहत और पुनर्वास कार्य किए। भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में भोजन, दवाइयाँ और घर बनाने में सहायता की।

२०१३ केदारनाथ बाढ़ (उत्तराखंड): मेरे स्वयंसेवकों ने बचाव अभियान, भोजन वितरण और राहत सामग्री पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

२०२० में कोविड–१९ महामारी: मेरे स्वयंसेवकों में पूरे देश में भोजन वितरण, मास्क और सैनिटाइजर का वितरण और स्वास्थ्य सेवा में सहायता की। स्वयंसेवकों ने प्रवासी मजदूरों की सहायता भी की।

चरखी दादरी की विमान दुर्घटना हो या कोरोना काल के समय मानवता की सेवा हेतु मेरे स्वयंसेवक सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहे हैं।

महत्वपूर्ण सेवा परियोजनाएँ– सेवा भारती यह सेवा गतिविधियों का प्रमुख अंग है, जिसके अंतर्गत हजारों सेवा प्रकल्प संचालित हो रहे हैं। सेवा भारती के स्वयंसेवक देशभर के दूरदराज के क्षेत्रों में १००,००० से अधिक सेवा परियोजनाओं में सम्मिलित हैं। वे अधिकांश बाढ़, भूकंप और सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं में सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाले होते हैं। सेवा भारती के पास शिक्षा में १७,५०० परियोजनाएँ, स्वास्थ्य सेवा में १२,००० सामाजिक कल्याण में २६,००० और

आत्मनिर्भरता की ९,२३८ परियोजनाएँ हैं।

इन परियोजनाओं का उद्देश्य चिकित्सा सहायता, डे केयर, पुस्तकालय, छात्रावास, बुनियादी शिक्षा, वयस्क शिक्षा, व्यावसायिक और औद्योगिक प्रशिक्षण, और सड़क पर रहने वाले बच्चों और कुष्ठ रोगियों को सहायता प्रदान करके समाज के आर्थिक रूप से कमजोर और सामाजिक रूप से उपेक्षित वर्गों की सेवा करना है। सेवा भारती का लक्ष्य वंचित समुदायों को उनके जीवन के सभी पहलुओं में आत्मनिर्भर बनाना है। देश को सेवा और शिक्षा की आवश्यकता थी। तब मैंने ऐसे संगठनों को प्रारंभ किया जो शिक्षा स्वास्थ्य और सेवा के लिए देशभर में काम कर सके।

शिक्षा क्षेत्र में उपक्रम

* **संस्कार केंद्र**– बच्चों के लिए संस्कार केंद्र, जहाँ उन्हें शिक्षा, संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है।

* **फ्री ट्यूशन सेंटर**– गरीब और वंचित बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा और कोचिंग की व्यवस्था।

* **अनौपचारिक शिक्षा केंद्र**– झुग्गी-झोपड़ी और दूरदराज के क्षेत्रों में बच्चों को पढ़ाई से जोड़ने के लिए विद्यालय।

* **महिला साक्षरता अभियान**– महिलाओं के लिए साक्षरता और कौशल विकास केंद्र।

स्वास्थ्य सेवाएँ

चिकित्सा शिविर– ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर और औषधियों का वितरण।

मोबाइल हेल्थ क्लीनिक– दूरदराज के क्षेत्रों में मेडिकल वेन के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएँ।

ब्लड बैंक और रक्तदान शिविर– जरूरतमंदों के लिए नियमित रक्तदान शिविरों का आयोजन।

आयुर्वेद और योग केंद्र– प्राकृतिक चिकित्सा और योग के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना।

महिला और बाल विकास

महिला स्वावलंबन केंद्र– महिलाओं के लिए सिलाई-कढ़ाई, बुनाई और स्वरोजगार के प्रशिक्षण केंद्र।

बाल संस्कार केंद्र– बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना।

आर्थिक स्वावलंबन

स्वरोजगार प्रशिक्षण– बुनाई, सिलाई, कम्प्यूटर और अन्य कार्यों में प्रशिक्षण प्रदान करना।

स्वयं सहायता समूह (SHG)– महिलाओं और युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना और वित्तीय सहायता देना।

कृषि प्रशिक्षण– किसानों को आधुनिक खेती और प्राकृतिक खेती के तरीकों की जानकारी देना।

आपदा प्रबंधन और राहत कार्य– बाढ़, भूकंप, सूखा और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत सामग्री वितरित करना। पुनर्वास कार्य और स्थायी आवास निर्माण।

सामाजिक उत्थान के उपक्रम

अनाथालय– अनाथ बच्चों के लिए मातृछाया जैसे देखभाल केंद्र।

नशा मुक्ति अभियान– युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए जागरूकता अभियान।

इस प्रकार समाज की आवश्यकता को देखते हुए मेरे स्वयंसेवकों ने अनेकों काम सेवा क्षेत्र के किए हैं जिनके द्वारा हुए परिवर्तन आज दिखाई देने लगे हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

मददगार नन्हा दोस्त

– रजनीकांत शुक्ल

वर्ष २०१९ का वह जुलाई का महीना था और उसकी चौबीस तारीख थी। हरियाणा राज्य के यमुनानगर जिले में पन्द्रह वर्ष का ईशान शर्मा अपने विद्यालय की छुट्टी होने के बाद घर लौट रहा था। वह नवीं कक्षा का छात्र था।

विद्यालय से आते–आते उसे लगभग ढाई तीन बज गए थे। जब वह अपने घर के निकट पहुँचने ही वाला था कि उसे एक अजीब–सा दृश्य दिखाई दिया। उसने देखा कि दो मोटरसाइकिल सवार एक महिला के साथ गरमागरम बहस कर रहे हैं। शक्ल–सूरत से एक विदेशी महिला लग रही थी।

ईशान ने इधर–उधर नजर घुमाकर देखा तो उसे आसपास सड़क पर कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया। उसे लगा कि आगे बढ़कर इस प्रकरण को समझना चाहिए। उसने आगे दौड़ते हुए इस कार्यवाही में हस्तक्षेप करने का प्रयत्न करते हुए आवाज लगाई– ऐ क्या कर रहे हो?

जब तक ईशान उनके निकट पहुँच पाता वे अपना काम पूरा कर चुके थे। महिला के पर्स को छीनकर उन्होंने अपनी बाइक का मुँह जिधर को था उधर को ही भगा दिया। ईशान ने बड़ी फुर्ती दिखाते हुए दौड़ लगाई और बाइक का पीछा किया।

किन्तु पैदल और बाइक का क्या मुकाबला होता। अगले चौराहे तक पहुँचते–पहुँचते ईशान के कदम रुक गए। उसे समझ नहीं आया कि वे बदमाश आगे किस दिशा में गए हैं। वह निराश कदमों से वापस आया। वह महिला अभी वहीं पर थी।

ईशान को आया देखकर वह आगे बढ़ी। अनजान देश में अचानक लुटे जाने पर वह परेशान थी। ईशान ने उससे बात करने की कोशिश की तो पाया कि उस महिला को हिन्दी या अँग्रेजी में से कोई भी भाषा नहीं आती है।

अब यह एक बड़ी समस्या थी। ईशान को पता था कि उसके साथ गलत हुआ है किन्तु वह घटना क्या थी आखिर? क्या वे लोग उसके जानने वाले थे? उस छीने हुए पर्स में उसका क्या–क्या सामान गया? वह किस देश की रहने वाली है? आदि अनेक ऐसे प्रश्न थे जो ईशान के मन में आ रहे थे। किन्तु भाषा की समस्या के कारण सारे प्रश्न अनुत्तरित थे।

ईशान ने कुछ सोचा और फिर उनका सामान ट्रैवल बैग उठाया और अपने साथ घर आने का संकेत किया। उसका घर बिलकुल निकट था। उस समय उसके घर पर कोई नहीं था पिताजी कार्यालय गए थे। माँ शिक्षिका थीं तो वे भी शाला में ही थीं और बहन भी अभी विद्यालय से घर वापस नहीं लौटी थी क्योंकि उसका उस दिन प्रेक्टीकल था। उसने अतिथि महिला को आराम से बैठाया पानी पिलाया और फिर घर पर रखे फोन से गूगल ट्रॉन्सलेशन के माध्यम से

अपने प्रश्न और उनके उत्तर अँग्रेजी में अनुवाद कर घटना को पूरी तरह समझा।

ईशान को पता चला कि छीने गए पर्स में महिला का मोबाइल, भारतीय करेंसी में दस लाख रुपए और कुछ जेवरात रखे थे। जिन्हें कि वे लोग ले गए थे। बिना मोबाइल व पैसों के वह अपरिचित देश में असहाय थी। ईशान ने महिला के सामान में से कोई सुराग ढूँढ़ने का प्रयत्न किया तो उनके सामान में रखे एक कागज में होटल के किसी दीपक का फोन नंबर लिखा था।

ईशान ने तुरन्त अपने फोन से वह नंबर मिलाकर महिला को पकड़ा दिया। किन्तु इससे बात बनी नहीं। उसकी हिन्दी बातों के उत्तर में महिला अपनी भाषा में जोर-जोर से बोले जा रही थी। उसके हाव-भाव को देखकर ईशान को लगा कि बहुत क्रोध कर रही थीं। बात समाप्त होने से पहले ईशान ने फोन अपने हाथ में ले लिया। अब ईशान ने उसे धमकाते हुए कहा कि इनका सामान जहाँ से ले गए हो वहीं आकर वापस कर जाओ वरना हम पुलिस को सूचित करने

जा रहे हैं। इसके उत्तर में उधर से फोन काट दिया गया।

अब ईशान ने पुलिस को सूचना दी। इंटरनेशनल मामला जानकर पुलिस कुछ ही देर में आ गई। पुलिस आ तो गई किन्तु उनके सामने भी समस्या थी कि उनमें से किसी को रशियन नहीं आती थी और न ही उनके पास कोई अनुवादक था। ईशान ने इस मामले में फिर से एक बार पुलिस की सहायता की। इस सारे घटनाक्रम में चार पाँच घंटे का समय लग गया।

शाम हो चुकी थी। विदेशी होने के कारण मामला हाई फाई था इसलिए पुलिस भी फूँक-फूँक कर कदम रख रही थी। वे उस महिला को अपने साथ सुरक्षा में ले गए। उसे होटल में ठहराया और कार्यवाही करते हुए अपराधियों को गिरफ्तार किया। पुलिस प्रशासन ने त्वरित कार्यवाही करते हुए उन्हें ससम्मान रूसी दूतावास में भी पहुँचा दिया।

संचार माध्यमों की रिपोर्टिंग से अगले दिन इस सारे घटनाक्रम की सूचना लोगों तक पहुँची। इतने छोटे ईशान की इतनी बड़ी समझदारी से लोग हैरान रह गए। विद्यालय में प्रधानाचार्य, अध्यापक सहपाठियों ने ईशान को बधाई दी। ईशान के इस उम्र से बड़े काम ने २४ घंटे के भीतर अपराधियों को पकड़वा दिया।

विद्यालय में विशेष समारोह का आयोजन कर ईशान को सम्मानित किया गया। जिले के कमिश्नर और अन्य जनप्रतिनिधियों ने ईशान की बहादुरी को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया।

ईशान को महिला और बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार की ओर से वर्ष २०२० का 'वीरता कोटि में' राष्ट्रीय बाल पुरस्कार वीरता देने की घोषणा हुई। देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने गणतंत्र दिवस से पूर्व देश के अन्य प्रतिभाशाली बच्चों के साथ ईशान को यह पुरस्कार प्रदान किया। यह सभी बच्चे गणतंत्र

दिवस की परेड में जीप पर बैठकर निकले। जिनके साहस को पूरे देश ने सराहा।

दिल्ली के अशोक होटल में जब मेरी भेंट ईशान से हुई तो उन्होंने बड़े होकर चिकित्सक बनकर देश व समाज की सेवा करने का संकल्प बताया। इन दिनों वे नीट परीक्षा की तैयारी करने में जी-जान से जुटे हैं।

मित्रो!

अलग नहीं पर अलग दिखें हम, करते ऐसे काम।
लक्ष्य न हो आँखों से ओझल, करें नहीं आराम।
लगे रहें हम लगातार यूँ, पहुँचेंगे मंज़िल पर,
जोश भरा है मन में अपने, हमें किसी का क्या डर।।

- नई दिल्ली

आपकी पाती

मान्यवर,

सादर प्रणाम!

बचपन से लेकर आज तक 'देवपुत्र' की अमिट छाप रही है। देवपुत्र बालमन से लेकर बड़े-बुजुर्गों का भी ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन करते आ रही है। सितम्बर २०२४ अंक भारतीय गौरव गाथा और मनोरंजन से भरी है। सम्पादकीय द्वारा हम नन्हों को समझाया गया कि सेहत (स्वास्थ्य) एक जागरूक राष्ट्र निर्माण के लिए कितना आवश्यक है। वैसे ही हिन्दी दिवस और शिक्षक दिवस को लेकर कवियों और लेखकों की कविता और लेख हममें राष्ट्रभक्ति की भावना जगाती है। माननीय मुख्यमंत्री जी ऐतिहासिक लेख रानी दुर्गावती और जनजातीय समाज पर आलेख ही देवांशु वत्स जी की चित्रकथाएँ उदासी दूर कर जीने और खुशियाँ मनाते रहने की शिक्षा देती है। पुस्तक परिचय में नये कवियों एवं लेखकों द्वारा हम तक अपना नाता सुदृढ़ करती है। मैं 'देवपुत्र' एवं इससे जुड़े लोगों की भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूँ।

- डॉ. जितेन्द्र 'जीत' भागड़कर
बालाघाट (म. प्र.)

श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना की कर्मस्थली

इन्दौर में भावभीनी श्रद्धांजलि सभा

दिनांक १६ जनवरी २०२५, समय सायं ४ बजे, स्थान इन्दौर के हृदय में स्थित गाँधी हॉल। इन्दौर महानगर में लगभग पचास वर्षों से अनवरत कर्मयोग की साधना करने वाले श्री. अष्ठाना जी को भावांजलि अर्पित करते हुए एक विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धासुमन अर्पित करने उमड़े श्री. अष्ठाना जी के अपने लोगों को समा पाने के लिए यह विशाल सभागार छोटा पड़ गया। 'देवपुत्र' के अभिन्न कार्यकर्ता और म. प्र. साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे के सूत्र संचालन में विद्याभारती के दोनों अखिल भारतीय संगठन मंत्री और देवपुत्र के संचालक न्यास वरिष्ठ न्यासी मा. श्री. यतीन्द्र जी शर्मा व मा. श्री. श्रीराम जी आरावकर के साथ मंच पर पूज्य महाण्डलेश्वर उत्तम स्वामी जी महाराज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व क्षेत्र संघचालक मध्यक्षेत्र मा. श्री. अशोक जी सोहनी, मीसाबंदी प्रतिनिधि के रूप में श्री. रमेश जी गुप्ता, पर्यावरणविद् पद्मश्री जनक पलटा, सुश्री. पुष्पा सिन्हा (कस्तूरबा ग्राम), श्री. सुशील श्रीवास्तव (कायस्थ समाज), श्री. हितानंद जी शर्मा (प्रदेश संगठन मंत्री भाजपा) श्री. विश्वजीत जी (प्रान्त प्रचार प्रमुख, मध्यभारत), श्री. जी. डी. अग्रवाल (दयानन्द शिक्षण समिति), श्रीमती गीता आगाशे (राष्ट्रसेविका समिति), श्री. हुकुमचंद सांवला (विश्व हिन्दु परिषद्) श्री. प्रदीप जी जोशी (उपाध्यक्ष प्रेस क्लब, इन्दौर) ने प्रमुख रूप से श्री. अष्ठाना को भाव शब्दांजलि प्रदान की।

ईसाई समाज की ओर से फादर प्रसाद जी और मुस्लिम समाज की ओर से शहर काजी डॉ. इशरत अली ने अपने संस्मरण साझा किए। 'देवपुत्र' परिवार की ओर से डॉ. कमल किशोर चितलांग्या (अध्यक्ष सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर व विद्या भारती मालवा प्रांत), गोपाल माहेश्वरी (संपादक देवपुत्र) ने स्मरणांजलि प्रदान की।

मा. श्री. यतीन्द्र जी शर्मा
(अखिल भारतीय संगठन मंत्री विद्या भारती)

देश के मा. प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी जी, प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी तथा विद्याभारती अ. भा. शिक्षा संस्थान की ओर से महामंत्री श्री. अवनीश जी भटनागर का शोक संदेश देवपुत्र के प्रबंधन्यासी सीए. राकेश जी भावसार ने वाचन किया। अंत में अष्ठाना परिवार की ओर से श्री. विवेक अष्ठाना (भतीजे) ने उद्‌गार व्यक्त किए।

श्रद्धांजलि सभा में और भी अनेक संस्थाओं ने श्रद्धांजलि दी एवं संस्थाओं की ओर से शोक संवेदना पत्र स्वर्गीय श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना के अनुज डॉ. अशोक अस्थाना को सौंपे।

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

नई दिल्ली
पौष 25, शक संवत् 1946
15 जनवरी, 2025

डॉ. अशोक अस्थाना जी,

श्री कृष्ण कुमार अस्थाना जी के निधन का समाचार सुनकर बहुत दु:ख हुआ। इस कठिन समय में मेरी संवेदनाएं परिवार के साथ हैं।

अपनी लेखनी के जरिए वह राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे ले जाने के प्रयास करते रहे। वह एक कर्तव्यनिष्ठ और निष्पक्ष पत्रकार थे। बाल साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया।

श्री कृष्ण कुमार जी अपने जीवनकाल में संघ की विचारधारा के साथ मजबूती से जुड़े थे। इसे जन-जन तक पहुंचाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वह परिवार के लिए एक सशक्त आधार और प्रेरणास्रोत थे। आज वह सशरीर इस संसार में नहीं हैं, मगर उनकी स्मृतियां, उनकी शिक्षाएं सदैव साथ रहेंगी और परिवार का मार्गदर्शन करती रहेंगी।

ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह शोक संतप्त परिजनों व शुभचिंतकों को यह दु:ख सहन करने का धैर्य और संबल प्रदान करें।

ॐ शान्ति!

(नरेन्द्र मोदी)

डॉ. अशोक अस्थाना
15, संवाद नगर
नौलखा चौराहा के पास
इंदौर
मध्य प्रदेश

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

दिनांक : 14 जनवरी, 2025

प्रिय अशोक जी,

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मालवा प्रांत के पूर्व माननीय संघचालक, देवपुत्र समाचार पत्रिका के संस्थापक व संपादक, विद्याभारती मध्य क्षेत्र के पूर्व सचिव व वरिष्ठ पत्रकार श्री कृष्ण कुमार अस्थाना जी के अवसान का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। शोकाकुल परिजनों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं।

श्रद्धेय अस्थाना जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारधारा की साहित्यक धरोहर को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी पुस्तकें, वार्ताएं और आलेख अविस्मरणीय रहेंगे। उनका योगदान हमें सदैव प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करता रहेगा।

बाबा महाकाल से दिवंगत की पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और शोकसंतप्त परिवार को यह गहन दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना है।

ओम शांति।

(डॉ. मोहन यादव)

प्रति,

डॉ. अशोक अस्थाना
40, संवाद नगर,
इन्दौर, (म.प्र.)

6, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462 002

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
VIDYA BHARATI AKHIL BHARATIYA SHIKSHA SANSTHAN
प्रज्ञा सदन, सरस्वती बाल मन्दिर परिसर, रिंग रोड नेहरु नगर, नई दिल्ली–110 065
Pragya Sadan, G.L.T. Saraswati Bal Mandir, Ring Road, Nehru Nagar, New Delhi-110 065

पत्र क्रमांक : वि.भा./325/2024–25 माघ कृष्ण प्रतिपदा, वि.सं. २०८१ दिनांक : 14 जनवरी, 2025

प्रिय बन्धुवर श्री अशोक जी,

आपके अग्रज एवं विद्या भारती के वरिष्ठ कार्यकर्ता परम आदरणीय श्री कृष्ण कुमार जी अष्ठाना की देहयात्रा पूर्ण होने का दुखद समाचार आज ही प्राप्त हुआ। श्री अष्ठाना जी का सम्पूर्ण जीवन संघ एवं विशेषकर विद्या भारती को समर्पित रहा। उनके विचार एवं उनके द्वारा स्थापित मानबिन्दु सभी कार्यकर्ताओं के लिए अनुकरणीय हैं। सहज, सरल, मृदुभाषी एवं सदैव मन को अच्छे लगने वाले श्रद्धेय अष्ठाना जी का अकस्मात ही हमारे बीच से चले जाना अपूरणीय रिक्तता का अनुभव कराता है। उन्होंने सुदीर्घ जीवन पाया किन्तु अन्ततः तो इहलोक से जाना प्रकृति का क्रम है। ईश्वरेच्छा सर्वोपरि।

प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा समस्त परिजनों को शोक की इस घड़ी में धैर्य धारण करने का सामर्थ्य प्रदान करे। विद्या भारती परिवार की ओर से मैं सम्पूर्ण परिवार के प्रति शोक की इस घड़ी में अन्तःकरण से संवेदना प्रेषित करता हूँ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शोक में सहभागी....

अवनीश भटनागर
महामंत्री

प्रति,
डॉ. अशोक कुमार अष्ठाना
15, संवादनगर, इन्दौर

दूरभाष : 011-29840126, 29840013, Visit us at: www.vidyabharti.net E-mail: vbabss@yahoo.com

आलेख

एक अविश्रान्त पथिक की जीवन यात्रा कुछ पड़ाव

श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना का जन्म १५ मई १९४० को उत्तर प्रदेश के आगरा जिले की खेरागढ़ तहसील के ऊँटगिरि ग्राम में श्री. लक्ष्मीनारायण जी अष्ठाना और श्रीमती भगवती देवी के घर ज्येष्ठ पुत्र के रूप में हुआ। राजनीति विज्ञान व इतिहास में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त श्री. अष्ठाना ने संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में शिक्षा जगत में पदार्पण लिया और १६ वर्ष तक आदर्श शिक्षक और सफल प्राचार्य रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान कार्यकर्ता श्री. अष्ठानाजी ने १९७३ में इन्दौर के 'दैनिक स्वदेश' में १२ वर्ष तक प्रबंध संपादक व प्रधान संपादक के दायित्व निर्वाह किया।

आपातकाल के समय वे इक्सीस माह कारावास में रहे। लेकिन निर्भीक पत्रकार के रूप में अत्याचारों के विरुद्ध अपने घुटने न टेके। सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया।

संघ के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए प्रांत संघचालक (मालवा प्रांत) का गुरुत्तर दायित्व तक सम्हाला। मध्य प्रदेश समाचार–पत्र संघ भोपाल के उपाध्यक्ष रहे। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के प्रादेशिक सचिव के रूप में हजारों विद्यालयों का मार्गदर्शन किया और अक्टूबर १९९१ से देवपुत्र के प्रधान संपादक बनकर उसे भारत की सर्वश्रेष्ठ बाल पत्रिकाओं के समकक्ष खड़ा कर दिया। अनेक राष्ट्रपतियों, राजनेताओं, संत समाज की शीर्षस्थ विभूतियाँ, समाज जीवन में उत्कृष्टता के प्रतीक महापुरुषों, पूजनीय सरसंघचालकों से लेकर संगठन के वरिष्ठतम और सामान्यतम कार्यकर्ताओं के साथ उनकी भेंट हुई।

श्री. अष्ठानाजी को प्राप्त अलंकरणों, सम्मानों, अभिनंदनों को गिनना भी संभव नहीं है। अनेक संस्थाओं, संगठनों और साहित्यजगत को राष्ट्रीयता के रंग में रंगने वाली वे सिद्धहस्त विभूति थे। भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान, बाल साहित्य सृजन पीठ के वे संस्थापक निदेशक रहे। उनके लिखे और कहे, कोटि–कोटि शब्द आज समाज जागरण व राष्ट्रभक्ति के मंत्र बनकर वातावरण में घुल मिल गए हैं। लाखों मानस में उनके जलाए संस्कार दीप अविचल जल रहे हैं।

१४ जनवरी २०२५ को वे मात्र त्रिदिवसीय रुग्णता के बाद रुग्णशैया से ही अपने संगठन के शिखर पुरुष पूजनीय सरसंघचालक जी से दूरभाष पर ही पूर्ण समाधान व्यक्त करते हुए परम ज्योति में लीन हो गए।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०१/२०२५ | प्रेषण तिथि ३०/०१/२०२५ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धावनत् डॉ. कमल किशोर चितलांग्या
(अध्यक्ष सरस्वती बालकल्याण न्यास, इन्दौर)

देकर दिवंगत हो गए,
जो साधना की रीति हमको।
वह निरंतर रख सकें,
आशीष ऐसा दीजिए।
पुत्रवत् श्रद्धासुमन हैं,
पूज्य चरणों में समर्पित।
त्रयरूप संरक्षक, पिता, गुरु,
दिव्य छाया कीजिए।।

देवपुत्र परिवार.....

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी